मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २२० अंक नवम्बर-२०२५
Volume no. 18, Issue No. 220 • November 2025

स्वास्थ्य पथ पदयात्रा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ५३ वे प्रागट्योत्सव तथा शांतिग्राम (अदाणी) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा ।

असारवा वाडी में बिराजित श्री वीर हनुमानजी महाराज के शतामृत पाटोत्सव के अवसर पर हनुमानजी की आरती उतारते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ।

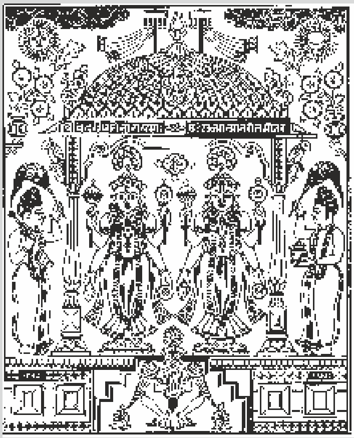

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १९ ● अंक : २२० ● नवम्बर-२०२५

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. ''समैयो'' के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री ०६

०४. श्रीहरि के ८ वे वंशज के मुख से अमृतवचन ०८

०५. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से १०

०६. भक्ति सुधा ११

०७. ''समैयो'' के उपलक्ष्य में २१

०८. सत्संग समाचार २३

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो,

दिपावली आकर चली गयी । संवत २०८२ का नया वर्ष प्रारम्भ हो गया । अच्छे हरिभक्तोने औसत निकाला होगा कि मैं सत्संग में कितना आगे आया हूँ । लाभ हानि का हिसाब तो रखना पडता है । महाराज ने आदेश दिया है । इस लिये ध्यान तो रखना पडेगा ।

हम सभी श्री स्वामिनारायण देव के आश्रित अधिक भाग्यशाली है कि अपना नया वर्ष परम श्रेष्ठ और कल्याणकारी हो । ऐसी प्रार्थना प.पू. महाराजश्री, पू. बड़े महाराजश्री, तथा प.पू. लालजी महाराजश्री भगवान के चरणो में की है । अर्थात् श्री स्वामिनारायण भगवान अपना श्रेय करेगे । इसमें शंका रखने की कोई आवश्यकता नही है ।

''समैया'' नजदीक आ रही है । अपने हरिभक्तो को सुदर्शन चक्र ''शिक्षापत्री'' के दो सौ वर्ष पूरा हो रहा है । ''समैया'' दो तरीके से मनाना है । प्रथम यह अवसर तन, मन, धन से अपना प्रसंग कैसे भव्य रुप से मनाया जाये और दूसरा मेरी 'जीवन' शिक्षापत्री के अनुसार महाराज की आज्ञा के अनुसार कैसे जीवन रहे इस पर ध्यान देना है ।

''समैयो'' के प्रबन्ध में पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता मे सभी सहभागी बनकर और यह मेरा प्रसंग है । ऐसा समझकर करे और अपने सेवा का लाभ भी दे । अपने श्रेय और प्रिय का ध्यान ले । लिखित में शिक्षापत्री का दस्ताबेज देकर गये । आज दो सौ वर्ष के बाद अपने ग्रंथो मे शिरोमणी रुप में है । इसके उपासना में क्यो बदलाव करे ? गाँव-गाँव और शहर, छोटे-बड़े सभी मंदिरो में हरिभक्तोने समैया के अवसर पर २१२ मिनट के महामंत्र धुन किये । सभी को धन्यवाद ।

तो, आइये ''समैया'' को अच्छा मनाकर धन्य बने ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०२५)

३ कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर एकादशी के दिन दर्शन हेतु पधारना।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम के सत्संग सभा में पधारना।

(अक्टुबर-२०२५)

२ शांतिग्राम (अदाणी) नये मंदिर मे मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण किये। ५३ प्राकट्योत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्यमें संत-हरिभक्तोने मनाया।

५ शायं भाट विश्रांति भवन में पधारना।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मे पूनम सत्संग सभा में पधारना।

८ साईन्स सीटी अमदावाद मे महापूजा के अवसर पर पधारना।

१२ असारवा श्री स्वामिनारायण वाडी गुरुकुल मे श्री वीर हनुमानजी महाराज के शतामृत पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१७ एकादशी के दिन श्री नरनारायणदेवना दर्शन के लिये पधार्या कालुपुर मंदिर में पधारना।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री हनुमानजी महाराज की पूजन आरती के अवसर पर पधारना।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मे परंपरागत आयोजीत समूह चोपडा पूजन स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण किये।

२२ नये वर्ष श्री नरनारायणदेव की अन्नकूट आरती उतारने पधारे।

२६ कांकरिया (रामबाग) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

२९ रतनपर (मूली प्रदेश) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०२५)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर जलझीलनी एकादशी के श्री गणपतिजी के वरघोडा के अवसर पर पधारना।

५ श्री स्वामिनारायण वाडी (गुरुकुल) असारवा श्री वीर हनुमानजी महाराज के शतामृत पाटोत्सव के अवसर पर आयोजीत विजय स्तंभ स्थापना के अवसर पर पधारना।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम सत्संग सभा के अवसर पर पधारना।

१७ जेतलपुरधाम आने वाला द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर आयोजित २०० घंटे की धूननी पूर्णाहुति के अवसर पर पधारना।

(अक्टुम्बर-२०२५)

२ शांतिग्राम (अदाणी) मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ५३ वे प्राकट्योत्सव को मनाया जाना।

३ एकादशी के दिन श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर शरदोत्सव के अवसर पर शायं आरती हेतु पधारना।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम की सभा में पधारना।

९ असारवा (स्वा. वाडी गुरुकुल) श्री वीर हनुमानजी के शतामृत पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

११-१२ दुबई मे आयोजीत सत्संग सभा में पधारना।

१७ कालुपुर मंदिर में एकादशी को दर्शन हेतु पधारना।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री हनुमानजी महाराज की पूजा-आरती हेतु पधारना।

२१ कालुपुर मंदिर में दीपोत्सव के अवसर पर आरती करने हेतु पधारना।

२२ नये वर्ष के दिन श्री नरनारायणदेव के अन्नकूट आरती हेतु पधारना।

आचार्येणैव दत्तं यद्यच्च तेन प्रतिष्ठितम् ।
कृष्णस्वरुपं तत्सेव्यं वन्द्यमेवेतरत्तु यत् ॥६२॥

अनुवाद : और जो श्रीकृष्ण का स्वरुप अपने लिये धर्मवंश के आचार्य उसे ही दिये है । अथवा वे आचार्य जिस स्वरुप की प्रतिष्ठा किये हो उस स्वरुप का प्रयोग और उसके अलावा जो कृष्ण का स्वरुप है । वह प्रणाम करने योग्य है । लेकिन प्रयोग करने योग्य नही है ॥६२॥

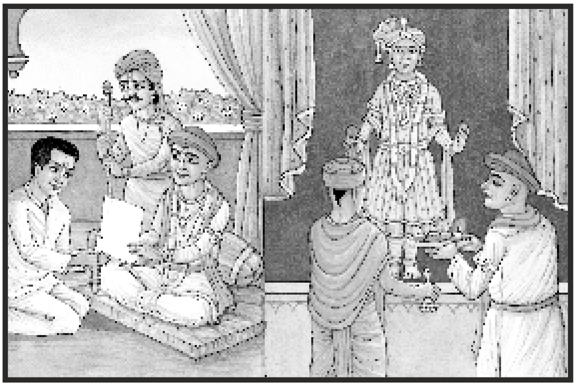

विवेचना : इस श्लोक में पूजा करने के लिये भगवान का स्वरुप कैसा होना चाहिए । और आचार्यने जिस स्वरुप की सेवा करने के लिये दिये है । अथवा वे जिस स्वरुप की वह प्रतिष्ठा किये हो । उसे स्वरुप की सेवा करे ।ऐसी आज्ञा है।

आजकल बाजार में भगवान के मन कल्पित अनेक प्रकार के चित्र बिकते है । उसका कोई स्तर या भाव नही सुरक्षित होता है । अपने - बनाने में कोई शुद्धता नही होता है । उनका चित्र पूजा कर या स्टोर में रख दिया जाता है । शिक्षापत्री के अनुसार व्यक्ति को शुद्ध होकर वस्त्र पहनकर शुद्ध आसन पर बैठकर पूजा करना चाहिए । पूजा के लिये स्वरुप शुद्ध और सुखचित्त होना चाहिए । ऐसा स्वरुप को पूजा मे रखने से पूर्व प्राण प्रतिष्ठा करना महत्वपूर्ण होता है । इसके बाद वह पूजा में रखी जाती है । तो वह प्रणाम करने योग्य होती है । ब्राह्मण पूजा कराते है । तब आवाहयामि स्थापयामि का आवाहन करके पूजा तत्पश्चात विसर्जन करते है । उसी प्रकार पूजा में रखे स्वरुप को भी आगच्छ भगवन्देव आदि सूत्रो का प्रयोग करके पूजा और विसर्जन करते है । इसमें प्रतिष्ठा की विधि आती ही है । उस स्वरुप की प्राथमिक विधि बताई गई है जो आगे है।

पूजा में रखे जाने वाले स्वरुपो का नियंत्रण हो सके । इस श्लोक में दो आज्ञा की गयी है । (१) अपने आचार्य द्वारा दी गयी । उसकी प्रतिष्ठा होने पर पूजा करे । (२) आचार्य उस धर्म वंश का होना चाहिए ।

मंदिरो में पूजा करने के लिये भगवान के चल और अचल दो स्वरुप हो ते है । अचल स्वरुप में चित्र प्रतिमा का प्रयोग होता है । ऐसे स्वरुप का आचार्य महाराज प्रतिष्ठा विधी करके प्रतिष्ठित करते है । पूजा या सेवा में रखी गयी चित्र प्रतिमा या धातु के अचल स्वरुप को प्रणालिका अनुसार हो तो महाराज की सहमति उसके लिये प्रतिष्ठित मूर्ति के पास द्रष्टि-स्पर्श प्रसादी करके पूजा में रखने की प्रथा है । इसके बाद वह स्वरुप पूजा-सेवा के लिये रख सकते है।

सत्संगिजीवन के ४८ अध्याय में बताये अनुसार सेवा०पूजा के लिये स्वरुपो का निर्णय शिक्षापत्री लिखने

से पहले श्रीजी महाराजने स्वयं किया है । जुनागढ से नारायणजीभाई सुतार को बुलाकर उनके पास से स्वयं मुद्रामूर्तियाँ बनवाकर भगवान के हजारो प्रतिलिपी बनवाये थे । तब से यह स्वरुप दोनो देश के कोठार से दिया जाता है ।(यह प्रथा अब जाने क्यो बंद हो गयी है । तब से पूजा मे रखे जाने वाले स्वरुप की एकरुता शुद्द नही रह गयी है ।)

इस प्रकार के मूर्तियो के बारे में श्रीजी महाराज स्वंय बोले है । कि मेरी आज्ञा है कि हरिभक्त मात्र श्री नरनारायण की मूर्ति कागज मे लिये तो पूजा करे । यह पूजा सभी शास्त्रो का प्रमाण है । और श्रीमद् भागवत ने अष्ट प्रकार की मूर्ति कही गयी है । और चित्र मूर्ति भी प्रमाण है ।और हमारी आज्ञा भी है ।

आप सभी हरिभक्त मन मे लायेगे कि जो कागज के उपर चित्र बना है । उसका हम सभी कुसंग से रक्षा करेगे ? ऐसा भाव किसी दिन लायेगे तो कहेगे कि हम लोग सतपुरुष है । तो आप सभी हमारी आज्ञा मानकर आप सभी नरनारायण की पूजा के लिये रखेगे । तो हमारे तथा नरनारायण के मध्य मन मिलता है । तो हम लोग नरनारायण को बोलेगे 'महाराज' जो पंचव्रत मे रहकर हमारे दी गयी आप की मूर्ति उसे पूजे आप उसमे अखंड वास करके रहे । क्योकि ये नरनारायणदेव है । हम सभी प्रेम से अपने पास रखेगे । आप सभी लोग निश्चय जानेगे कि यह मूर्ति श्री नरनारायणदेव पांडे ही है । ऐसा समझकर कभी मूर्ति को अपूजनीय मत रखना । और प्रातः काल स्नान करके भगवान की पूजा करके बाद में सभी कार्य करना । और् जब तक पंचव्रत के मान में रहकर इस नरनारायणदेव की पूजा करेगे तब तक इस मूर्ति के बारे में श्री नरनारायणदेव विराजमान रहेगे । यह हमारी आज्ञा है । यह आप सभी दृढता से माने'' (ग.प्र.प्र. ४८) इस श्लोक में 'दत्त' शब्द के उपर विचार करने लायक है । यह 'दत्त' का अर्थ यह होता है । मंत्र दीक्षा देते समय पूजा की मूर्ति दी जाती है । तो वह इस अर्थ मर्यादा में आ जाती है । पहले अष्टछाप की मूर्तियो पूजा के लिये दी जाती थी । जिसकी छाप श्रीजी महाराज स्वयं पसंद किये थे । यह छाप अभी अहमदाबाद और् वडताल मंदिर में पड़ी है ।

पहले सेवा-पूजा के स्वरुप समान ही हरि मंदिरो में प्रतिष्ठा करने वाले स्वरुप को एक समान रखा जाता है । अब तो अनेक प्रकार के रुप रखे जाते है । वचनामृत में अच्छे से बताया गया है । कि सभी सफेद वस्त्र धारण किये थे । अथवा सद् प्रेमानंद स्वामी द्वारा वर्णित ''सदा श्वेताम्बर श्रीजी धारण करते, अम्बर जरकसी कई बार'' ऐसे स्वरुप अब दुर्लभ हो गये है ।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

BANK DETAILS FOR ONLINE / CHEQUE DONATION PURPOSE

STATE BANK OF INDIA
NAVRANGPURA BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 62303101798
IFSC : SBIN0003096
MICR CODE : 380 002 029

INDIAN BANK
VASTRAPUR BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 50379847476
IFSC : IDIB000V135
MICR CODE : 380 019 019

BANK OF INDIA
RELIEF ROAD BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 20131010002 7259
IFSC : BKID0002013
MICR CODE : 380 013 027

श्रीहरि के ८ वें वंशज के मुख से अमृतवचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

वीर हनुमानजी महाराज (असारवा गुरुकुल के शतामृत पाटोत्सव (१७५ वर्ष) के अवसर पर यज्ञ महोत्सव का विजय स्तम्भ स्थापना विधी के अवसर पर, ता. ५-८-२०२५ : हम सभी अधिक भाग्यशाली है। प्रायः छोटे-बडे प्रसंग का लाभ प्राप्त करने का अवसर मिलता रहता है।

अयोध्याप्रसादजी दादा ने जिस हनुमानजी महाराज अपने को दिये है। मै मानता हूं कि ऐसे कम मंदिर है। जहाँ से दादा की मूर्ति हटाई नही गयी हो । जिस स्थान पर अयोध्याप्रसादजी दादा ने प्रतिष्ठा की है। वहाँ पर १७५ वर्ष से हनुमान दादा हम सभी को दर्शन दे रहे है। और अहमदाबाद देश की परम्परा है कि सिद्धान्त सर्व प्रथम बना रहे। सिद्धान्त से समझौता नही किया जाता है। जहाँ पर देव की बात आती है। भगवान की बात आती है। शास्त्रो की बात आती है। मूल सम्प्रदाय के सिद्धान्त की बात आती है। वहाँ पर कोई त्रुटी नही होती है। महाराज ने जो आज्ञा दिया है। महाराज के सिद्धान्त से जुडकर लगभग २०० वर्षो से है। यह हमारी सबसे बडी पूँजी है। समय के साथ गिरावट आ रही है। उसी प्रकार सिद्दान्त और नियम में कमी आती जा रही है । लेकिन हम सभी भाग्यशाली है कि अपने अहमदाबाद देश के संत और हरिभक्त एक होकर भगवान को खुश करने के लिये । अथक प्रयास इस उत्सव के माध्यम से करते आये है।

१७५ वर्ष जब हनुमानदादा का मनाने जा रहे है। थोडे ही समय में उत्सव का लाभ लेना है । शा. स्वामी निर्गुणदासजी स्वामी पूरा इतिहास, इस भूमि की तथा दादा की मूर्ति की कहे है। यह इतिहास हमें समझना है। यह समझकर अपने भविष्य के पीढी को बताना है। अपने बच्चो को यहाँ पर दर्शन कराने अवश्य लाये । शनिवार को ही आये यह जरुरी नही है। कभी भी लाये । लेकिन यहाँ पर लाये। दादा का दर्शन करे । अपने बच्चे-बच्चियो को इस भूमि तथा हनुमानजी की महिमा जो हमारे कुल देवता है। बच्चो में सही ज्ञान भरे। इस उत्सव-उल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। सभी लोग जान सके। ऐसा हमे प्रयास करना चाहिए।

जो भी हरिभक्त इस उसवस में और विजय स्तम्भ के लिये सेवा दिये है सभी धन्यवाद के पात्र है। अभी तक यदि कोई हरिभक्त सेवा नही दे सके हो उनसे अनुरोध है कि छोटी-बड़ी सेवा तन, मन, धन से अवश्य करे। यह उत्सव आप का है। इस भाव से भाग ले। आज के अवसर बड़ी संख्या में संत-हरिभक्त उपस्थित हुए है। तब भगवान के चरणो में प्रार्थना करते है। अपना यह १७५ वर्ष दादाजी का उत्सव भव्य रुप से हो । नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया, शिक्षापत्री भाष्य सप्ताह पारायण के अवसर पर ता. ८-९-२०२५ : हम सभी अधिक भाग्यशाली है। हम सभी को ऐसे उत्सव समैया वह भी इतने विशाल रुप में लाभ मिलता है । प्रारम्भ यदि पर्व से करे तो इसके पश्चात अहमदाबाद देश में कई उत्सव मनाये गये। यह समैया इस लिये महत्वपूर्ण है कि स्वामिनारायण भगवान के द्वारा अपने हाथो से लिखी मात्र एक शास्त्र है। जो २०० वर्ष

पूर्ण करने जा रहा है । इसमें लिखी हुई बात सभी लोगो के मध्य जाये । तथा सभी लोग इस आज्ञा को जीवन में उतारे इससे जीवन लोगो का सुखी बने । महाराज ने केवल मोक्ष के उपर ही ध्यान नही दिये है । इस लोक में सुखी होने का साधन तो शिक्षापत्री ही है । महाराज के बचन है जो लोग शिक्षापत्री का पालन करेगे उनका लोग-परलोक दोनो अच्छा होगा । यह अधिक समझने वाली बात है । महाराज ने अति सरल साधन दिये है । इसका पालन करे । अभी तो बाजा रमें परिविर्तित स्वरुप में आ गई है । इससे हमे नही लेना है । हमे जो मूल सिद्दान्त मिला है । मूल सम्प्रदाय मिला है । मूल परम्परा मिली है । इसको लेकर चलना है ।

लगभग ६ महिने से कम समय समैया का रह गया है । इसे उल्लासपूर्वक मनाना है । इसका प्रारम्भ मूली से होगा । वसंत पंचमी के दिन राधाकृष्णदेव मूली में जो बिराजमान है । उनका पाटोत्सव अभिषेक, वसंत पंचमी के उत्सव के बाद सायंकाल कार्यक्रम है । ता. २३ के २७ जनवरी तक है । अहमदाबाद में जहाँ पर पर्व मनाया गया था । वही स्थल है । इसकी तैयारी शुरु हो गयी है । थोडे दिन के बाद मैदान पर कार्य होगा । स्वयं सेवको के लिये फार्म भी बनाया गया है । समैया मे सभी क्रिया-कलाप उल्लास तथा उत्साह से मनाया जायेगा । अभी कालुपुर मंदिर में २१२ घंटे की पूर्ण धुन की गयी थी । लगभग २३० से अधिक गाँव के हरिभक्त आये थे । जो उत्तर गुजरात, मूली, भुज आदि स्थलो से आये थे । अब गाँव-गाँव में धून की जायेगी । इसका छोटी आवृत्ति चल रही है । साढे तीन घंटे का २१२ मिनिट गाँव-गाँव तथा शहर में धुन की जायेगी । यह हरिभक्तो की इच्छा, उत्साह है । देव के प्रति समर्पण है । सम्प्रदाय के प्रति लगाव है । तब ऐसा उत्सव हो सकता है । हम सब एक होकर संत-भक्त देव को खुश करने के लिये हम सभी कार्य करते है । तब यह कार्यक्रम सफल होता है ।

अभी आने के बाद अभिषेक स्वामी के साथ बात हुई । थोडी ठंडक आ जाये तब बैठे तभी समैया के उपलक्ष्य में इस क्षेत्र के कांकरिया मणीनगर और आस-पास छोटे-बड़े क्षेत्र में बड़ी शाकोत्सव करना है । जिसके कारण हरिभक्त लोग एकत्र होगे । समैया के अवसर पर जो जो कार्य करना है । वह सभी के पास पहुँचे । सभी लोग जुडे इस लिये शाकोत्सव किया गया है । इसकी तारीख बाद में घोषित की जायेगी । दिपावली के बाद अहमदाबाद के प्रत्येक विस्तार में सभा, युवा शिबिर होगी । जिस पर सभी ध्यान दे ।

विशेष करके कांकरिया मंदिर के आँगन में शिक्षापत्री भाष्य की इतनी अच्छी कथा श्रवण की गयी । जिन यजमानो ने भाग लिया । उन्हे धन्यवाद है । शास्त्री स्वामीने बताया है । काफी लोग समैया के लिये सहयोग का अंश दे दिये है । कोई न कम कम या अधिक नही होती है । भगवान को खुश करने के लिये । किसी को दिखाने के लिये नही है । इसने ११ लाख दिया तो मै १२ लाख दूँगा ऐसा नही करना है । भगवान ने जो हमे शक्ति दी है । उसी अनुसार भगवान को खुश होने के लिये लिखवाना है । १ रुपया भी करोड रुपया के समान होगा । आप लोग इतनी संख्या में भाव के साथ एकत्र हुए है । तो यह देव के प्रति निष्ठा है । इस लिये सम्प्रदाय में है इसी भाव से समैया में सेवा देना है । स्वयं का कल्याण हो, परिवार का भला हो । इसके लिये सेवा देना है । जिसने सेवा दिया है । उन्हे धन्यवाद है । अभी भी समय बाकी है । जिस हरिभक्त की ईच्छा हो अवश्य नाम लिखाये । यह कार्य समैया के माध्यम से करना है । सभी का सहयोग चाहिए । ऐसा उत्साह हमारे क्षेत्र में बना रहे । ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है ।

श्री
स्वामिनारायण
म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब
श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन
हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

आश्विन वद-१३ धनतेरस के दिन श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में प्रति वर्ष की तरह जैसे श्री लक्ष्मीजी की पूजा-आरती प.पू. बड़े महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया । इसमें रखी गये । चांदी के सिक्के की प्रसादी रुप में सभी हरिबक्त चाँदी का मूल्य अधिक होने के कारण भी खरीदे थे ।

इसके पश्चात काली चौदस के दिन भी म्यूजियम में रखे गये । प्रसादी के हनुमानजी की पूजा प.पू. बड़े महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया था । असंख्य हरिभक्तोने लाभ लिये थे । दिपावली के अवकाश में अपने श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में हरिभक्त तथा अन्य सत्संगीलोग आये थे । प्रसादी के वस्तु का दर्शन करके सभी लोग धन्य हुए ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची

(सितम्बर-२०२५)

ता. ०९-०९-२०२५ प.भ.श्री धर्मेन्द्रभाई रावजीभाई पटेल - निकोल (धर्मेन्द्र डेकोरेशन) ।
ता. १४-०९-२०२५ प.भ.श्री मुकेशभाई मनसुखभाई गांधी - नारणपुरा ।
ता. १७-०९-२०२५ कच्छ सांख्ययोगी बहेनो - प्रे. सांख्ययोगी निताबा ।

(अक्टूबर-२०२५)

ता. १२-१०-२०२५ प.भ.श्री स्वप्नील कमलेशभाई पटेल - यु.एस.ए. (जमीयतुपरावाला) ।
ता. १४-१०-२०२५ प.भ.श्री महेन्द्रभाई भक्तिभाई शीवदास पटेल - वुडवाला - वर्त. सोला भागवत ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची

रू।. ११,००,०००/- प.पू. बड़े महाराजश्री एवम् प.पू. बड़े गादीवाले के खुशी हेतु - प.भ. संजयभाई रमणभाई पटेल, प.भ. मीनाबेन संजयभाई पटेल, प.भ. भाविक संजयभाई पटेल, प.भ. ऋतु भाविक पटेल, आदर्श भाविक पटेल - रामदास बापा परिवार - उनावा - गांधीनगर. (प्रसादी की वस्तु)की सेवा मे ।

रू।. ५१,०००/- प.भ.श्री डाह्याभाई नारणदास पटेल परिवार - माणसावाले - दिवाली पर्व के अवसर पर

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "आत्मज्ञान बना रहे ऐसा प्रयास रखे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल – घोडासर)

आज के कुछ समय पूर्व कुछ बहनो से मुलाकात हुई है । जिसे लगातार आत्महत्या करने का विचार आ रहा है । ऐसा विचार कभी नही करना चाहिए । हमारे जीवन में जो भी सुख-दुःख आता है । वह भगवान की ईच्छा से आता है । भगवान की ईच्छा समझकर सब स्वीकार कर लेना चाहिए । कभी भी जीवन में आत्महत्या का विचार नही लाना चाहिए ।इस अवस्था में कोई निर्णय भी नही लेना चाहिए ।इस विषम अवस्था में क्षणिक वैराग्य आता है । हम सभी सुनते है कि ''टकी का वैराग्य'', ''स्मशान वैराग्य'' इसी की तरह सब क्षणिक वैराग्य होता है । इस लिये ध्यान देना चाहिए। जब विचार आये तो रुक जाना चाहिए ।शांति से विचार करना चाहिए । कोई भी निर्णय नही लेना चाहिए । नींद नही आये तो नींद की गोली भी नही खाना चाहिए। माला करें । दो माला रखे एक पूजा के लिये और दूसरा अपने विस्तर के पास रखे । कभी भी मन की शांति के लिये माला करे ।माला करते-करते नींद आ जाये तो सो जाये । घर में नींद की गोली नही रखे । विशेष तकलीफ में डाक्टर की सलाह से नींद की गोली खा सकते है । यह संसार रंग मंच की तरह है ।सब कुछ लगातार नाटक की तरह चल रहा है । जितने भी संसार के जीव है । सभी अभी पात्र का मंचन कर रहे है। मंचन करने के बाद पात्र का कार्य समाप्त हो जाता है। यह रंग मंच जीवन की ही रहने की कला है। हम सब कठपुतली है। धागा भगवान के हाथ में है । आप सभी ने कभी सिनेमा देखा होगा । पिक्चर में मरण होने पर हम सब रो देते है। सब कुछ झूठा होती है । पता होने के बाद भी हम सब रो देते है । कुछ समय के लिये सत्य मान लेते है। पिक्चर में मृत्यु होने पर क्या सूतक लगता है। तो किस लिये रोना ?? इस संसार में निर्लेप होकर रहना चाहिए। राजा जनक की तरह पूरे निर्लेप नही रह सकते है । लेकिन हमे प्रयासपूर्ण करना चाहिए ।मैं और मेरा दो अलग भाग है।मै आत्मा हूँ।यह सत्य है । इस शरीर में अपना क्या है ? यह समझने लायक है।

सत् चित-आनंद स्वरुप यह अपना है।

सत् अर्थात् अविनाशी (त्रिकाल सत्य) है। है और रहेगा।

चित्त - अर्थात् ज्ञान दर्शन - देख लेना - ज्ञाता - दृष्टा।

आनंद - अर्थात् परमानंद - आत्मा का स्वाभाविक गुण होता है।

इस प्रकार स्वयं 'शुद्ध आत्मा' है । वास्तव में स्वयं आत्म स्वरुप है । हम 'मै' के विषय में जाते है । पहचान जाने पर दुःख नही होता है । अंतर की शांति समाप्त नही होती है। अपना आत्म स्वरुप होता है। मेरा भाग समझे । हम अपना शरीर कहते है। मेरा हाथ मेरा पैर जहाँ पर आये । में सभी अनात्मा विभाग होता है । जैसे मेरा घर है। घर में रहने वाला घर से अलग होता है। मेरा शरीर है । तो शरीर में रहने वाला 'चेतन तत्व' (शुद्ध आत्मा) यह शरीर से भिन्न है। हम स्वयं है। हमे आत्म ज्ञान नही है। इस लिये दोनो को एक मानते है। जो एक मानता है। वही अहंकार है। जड़ तत्व अर्थात् शरीर आत्मा के रहने पर सक्रिय है । जानना ही आनंद ये आत्मा के गुण है । लेकिन अहंकार मान लेता है कि मै

जानता हूँ । अहंकार अर्थात् भ्रांति । भ्रांति के कारण मैं का भाव आ जाता है । हम सब मात्र निमित्त है । कर्तापण का भाव अहंकार से आ जाता है । कर्तापण समाप्त होने पर कर्म से बंधता नही है । आत्मज्ञान हो जाने पर ये सब समझने में सहायक होते है । आत्मज्ञान में लगातार रहना कठिन है । थोडे समय के लिये रह सकते है । शेष कर्ता का भाव आ ही जाता है । आधि, व्याधि, उपाधि के अंदर समाधी रहती है । अन्तर में सदैव निराकुलता रहे तो आत्मा का सच्चा सुख है । आत्मज्ञान के लिये प्रतिदिन अभ्यास करना चाहिए । अपनी अनुकुलता के अनुसार समय का चयन करना चाहिए । आँख बंद कर याद करे कि आत्मा शरीर से अलग है । ''मै आत्मा हूँ'' हमारे उपर सुख-दुःख का प्रभाव नही आना चाहिए । यह आत्मज्ञान को समझने का सशक्त माध्यम है । यदि हमारे जीवन में कोई अप्रिय घटना हो जाने के बाद पूरे जीवन भर याद रहता है । ऐसे बड़ी घटना पर विचार करना चाहिए । इसी क्षण सब कुछ घटित हुआ है । ऐसा ज्ञात होगा कि अशुभ घटना में भी हमारा हित किया था । मै उससे कैसे बाहर आया । भगवान का आभार मानना चाहिए । जो कुछ होता है अच्छे के लिये होता है । ऐसा होने पर ऐसा लगता है कि शायद इस घटना से बाहर नही जा सकते थे । सब कुछ हमेशा अच्छा नही होता है । कईबार ऐसी अवस्था रहती है । तो अपना प्रारब्ध मान लेना चाहिए । भगवानने हमारी योग्यता से अधिक हमें दिये है । कृतज्ञता का भाव रखने से उग्रता कम रहेगी । दश इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, पंचभूत और पंचतमात्र से युक्त शरीर जड है । इसके प्रति क्या प्रेम रखे । ऐसा करने से चिंता कम रहेगी । और कर्ता का भाव और अहमभाव से मुक्ति मिलेगी । दुःख और मृत्यु को टाल नही सकते है । कर्म करने की स्वतंत्रता भगवान हमे दिये है । कर्म फल अपने हाथ में नही है । भगवानने यह अपने पास रखा है । भगवान सब कुछ अच्छा ही करेगे । कर्ता का भाव भगवान को सौपकर तनाव-चिंता से मुक्त हो जाना चाहिए । छोटा बच्चा होता है । उसका पिता यदि अंगुली पकडे रहता है तो उसे चिंता नही रहती है । क्योकि पिता बच्चे से अंगुली नही छुडवायेगा । यदि बालक पिता की अंगुली पकडेगा तो कभी बाजार में खिलौन, मिठाई देखकर अंगुलि छोड देगा । पूजा जगत माया का बाजार है । हम विनाशी वस्तु देखकर दौड जाते है । इसमें भगवान का कहाँ पर दोष है ? भगवान आपका हाथ पकडने के लिये तैयार है । हमे बच्चे की तरह १०० प्रतिशत शरणागति लेना है । तब भगवान हाथ पकड लेगे । जब भगवान आप का हाथ पकडेगे वे कभी छोडेगे नही । इस संसार में तीन वस्तु है । ईश्वर, जीव और माया इसमें जीव मध्य में है । जीव भगवान के प्रति आकर्षित है । क्योकि जीव भगवान का अंश है । लेकिन जीव जो सामने देखता है । वही उसे अच्छा लगता है । यह माया जाल में फस जाता है । क्योकि माया प्रत्यक्ष में है । भगवान प्रत्यक्ष नही है । भगवान के प्रति क्षणिक लगाव आता है । मंदिर में सत्संग होता है । तब तक भगवान के लिये होता है । मंदिर से बाहर आने के बाद नींद आती है । भगवान के प्रति आकर्षण क्षणिक हो जाता है । और कर्ता का भाव आ जाता है । कुछ नही करने पर भगवान भी हमारी सहायता नही करते है । कार्य करने पर मदद करते है । उदाहरण के लिये कोई बहन हार बनाती हो तो हमे मदद करने का भाव पैदा होता है । खाली बैठने पर कैसी समहायता करेगे ? इसी प्रकार जब जीव सत्संग करता है । तब भगवान को पुकारता है । भगवान को कर्ता-धर्ता माने उन्ही की मर्जी में अपा हित समझे । यह बडी बात है । नाटक में समय सीमा तय होती है । कितने समय तक स्टेज पर रहना है । क्या बोलना है ? कार्य पूर्ण होने के बाद स्टेज खाली कर देना पडता है । यह संसार ऐसा ही है । किस पात्र पर कितना कार्य करना है । जगतरुपी रंगमंच पर कब तक रहना है । सब निश्चित है ।

भगवान का हाथ कभी मत छोडे । हाथ छूटने पर बालक अलग हो जायेगा । तो कुछ घंटे के बाद मिल जायेगा । भगवान का हाथ छुटने से लाख चौरासी मे धुमना पडेगा । यह मानकर ध्यान देना चाहिए ।

•

विश्वासपात्र भक्त दादा खाचर

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान के श्री मुख के बचनो का अमूल्य ग्रंथ अर्थात् वचनामृत है । यह आध्यात्मिक ग्रंथ है । सभी शास्त्रो का सार है । कई आध्यात्मिक प्रश्नो का निराकरण है । किसी भी मुमुक्षु को सरल भाषा में जीवन का सच्चा मार्गदर्शन मिले । महाराज तो स्वयं अपना धाम और अक्षरमुक्त तथा अपना पूरा ऐश्वर्य लेकर इन ब्रह्मांड में आये है ।

लोया के २ वचनामृत में श्रीजी महाराज ने प्रश्न पूछा है । इस सत्संग में हरिभक्त का मृत्यु भय दल जाता है । शरीर रहते कल्याण हो जाता है । किसी ने उत्तर नही दिया । तब श्रीजी महाराज ने उत्तर दिया कि चार प्रकार का जो भक्त उसे मृत्यु का भय नही रहता है । उसमें पहला भक्त जो विश्वासु होता है । हम ऐसे विश्वास पात्र भक्त की बात करते है । जो कृतार्थ तथा मृत्यु भय से दूर विश्वासी भक्त का नाम ''वचनामृत'' मे पेज-पेज पर नंद संतो ने लिखा है । जिसका समर्पण भाव अजोड था । महाराजने उनकी परीक्षा ली थी । हे दादा, यह आप की जो सम्पत्ति है । यह सब अपने बहनो को लिख दो । महाराज के वचन सुनकर दादा खाचर खुश हो गये । तथा लिखने के लिये सहमत हो गये । इस प्रकार वह लिख दिये ।

तब महाराजने कहा कि बहन के राज्य में भाई को नही रहना चाहिए । तब दादा खाचर ने कहा, हे महाराज करियाणी में रहने वाले खाचर के घर पर नौकर बनकर जीवन निर्वाह करुगा । ऐसा दादा खाचर की बात सुनकर महाराजने कहा में एक साधन देता हूँ । उसके उपर बैठकर जाओ । ऐसा कहकर साधन दे दिये । उस पर बैठकर राधावाव तक गये । दादा खाचर के घर वालो से कहना कि ''दादा खाचर करियाणी सेवक के रुप में रहने गये है । आप क्या करेगे'' । तब बहनने कहा ''हे महाराज ! आप तो पतिव्रता धर्म लिखे है । उसमें कहे है कि जहाँ पति रहे वही पर रहना चाहिए । इस कारण से मै भी वही जाऊगी । तब महाराजने कहा कि पैदल जायेगी या वाहन से ? बहनने कहा कि ''साधन दे तो ठीक है नही तो पैदल चली जाऊगी । महाराज ने वाहन दिया । उसमें बैठकर राधावाव तक गयी ।

इसके बाद महाराज मोटीबा और लाडूबा से कहते है कि ''आप लोग राज लेकर बैठे है लेकिन भावनगर कार्यालय में कार्य आयेगा तो कौन आप मे से जायेगा ? दोनो बहन कहती है कि हमे सेवक रखा पडेगा । तब महाराज बोले ''दादा खाचर करियाणी में सेवा देने जा रहे है । तो उन्हे बुलाकर सेवक रख लो ।'' महाराज की बात सुनकर बहने बोली कि महाराज वापस बुलाले । दादा खाचर को बुलाने के लिये महाराजने आदमी भेज दिया । और बोले अपनी बहन का सेवक बनर कर रहो । दादा खाचर तथा उनकी धर्मपत्नी रधावाव से वापस घर आ गये । इस प्रकार परीक्षा लिये । तो भीदादा खाचर विचलित नही हुए ।

इसी प्रकार इनके घर पर अन्नकूट, जन्माष्टमी, फूलदोत्सव आदि के उत्सव दिवस जाये तो दादा खाचर से कहते कि ''कि आप अपना घर खाली करके बाहर रहो'' । तो वह दूसरे घर में जाते थे । इस प्रकार महाराज दादा का घर बदलवाते थे । २४ वर्ष में ५६ बार घर बदलना पड़ा था । यह देखकर मुक्तानंद स्वामी ने कहा ''हे महाराज दादा खाचर तो दरबार है । उन्हे इस तरह करवना अच्छी बात नही है । तब महाराज ने कहा कि उनको मे अंतकरण देख रहा हूँ

। हमने जो कुछ कहा है वे सब करते गये है । महाराज के आदेश में उन्हे कुछ संशय नही दिखाई देता है । हमे तो रोटी खाने दो । ''वैसे भी किसी दिन कहे नही है ।''

प्रिय भक्तो लोया के तीसरे वचनामृत में महाराज कहते है । इतना यदि संत का महात्म्य इतना हो तो । इसके लिये घर का त्याग किये । स्त्री का त्याग किये । सुख का त्याग किये । राज्य का त्याग किये । सुख का त्याग किये । धन का त्याग किये । स्त्री का त्याग किये । सभी हरिभक्तो का नाम लिये । उसमें दादा खाचर का नाम लिये । उसी प्रकार गढडा के अंत्य में २४ वे वचनामृत में जो हरिभक्त के बारे में जो अच्छा है । वह कहते है । उसमें प्रथम दादा खाचर को विश्वास के अंग में कहे है । आप देखे तो महाजा के वचन में कितना विश्वास होगा । उनके भक्ति में विभोर होकर भगवान उनके घर में निवास किये ।

•

कठलाल के रामबाई

– कंचनबेन बाबुभाई अडालजा (रतनपुर-मूली देश)

गुजरात में कठलाल नाम का गाँव है । इस गाँव में एक रामबाई नाम की वृध्द ब्राह्मणी रहती थी । पूरे गाँव में एक ही श्रीजी महाराज की भक्त थी । उसका लोग मजाक करते ते । अपमान भी करते थे । वृध्धा के मन में कोई अवगुण नही था । लोग निंदा करे तो बोलो मैं कमजोर नही हूँ । कुँवा में पानी भरने स्वयं जाना पडता है ।

एकबार महाराज गुजरात में धुम रहे थे । धुमते धुमते कठलाल गाँव के किनारे से निकले । शीघ्रता से दूसरे स्थान पर जाना था । इन कारण से गाँव में नही गये । बाहर औरते पानी भर रही थी । उन्होने यह देखा । कुछ देर के बाद रामबाई वृध्धा कुए पर पानी भरने आयी । पानी भर के माथे पर मटका थी । वहाँ पर एक बहन बोली ''आप के स्वामिनारायण अभी यहाँ से निकले है ।

वृध्धा श्वास भर के दौडती हुई आ गयी । इतनी दौडी की खडा होने मे कष्ट हो गया था । मटके को नीचे उतारकर हाथ जोडकर बोले ''महाराज, मेरा घर छोड़कर आप बाहर से चले आये ।

महाराज बोले : क्या हुआ हमे शीघ्रता से पहुँचना है । वृध्धाने कहा कि जल पान करे । महाराज ने मटके से जलपान किये । अब मटके का जल प्रसादी का हो गया । महाराजने कहा, इस जल का क्या करेगे ? वृध्धा ने कहाँ ''गाँव के कुए में डाल देगे ।'' पुरा गाँव जलपान करेगे । शेष में इस गाँव में अकेली सत्संगी थी । आप गाँव के बाहर से नही जाये । नही तो मै देखुगी ।

वृध्धा की श्रध्धा देखकर खडे हरिभक्त दंग हो गये । महाराज खुश हो गये । महारा जने आशीर्वाद दिया । माँ आप का सत्संग फले ।

वृध्धा का सत्संग फलीभुत हुआ । महाराजने स्वयं ''वचनामृत में उन्हे याद करके कहे कै कि जो भगवान का भक्त है । वह कठलाल की वृध्धा की तरह होना चाहिए । भगवान शरीर की रक्षा करे । उसका उसे हर्ष नही है । रक्षा नही करे तो शोक भी नही है । शेर खा जाये । सर्प दंश दे जाये । शस्त्र लगे । पानी में डूब जाये । कुछ भी हो जाय में तो भगवान के धाम का प्राप्त करुंगी । ऐसे मस्ती में भगवान को भजे । वह भगवान का भक्त ।

दूसरा एक अवसर महाराजने 'वचनामृत में कहे है । भगवान का भक्त हो । यदि उसी शूली पर चडा दिया जाये । और् भगवान उसके पास खडे हो । भक्त के मन में यह भाव नही आये कि भगवान बचाये । यह कर को स्वयं भोग ले । ऐसे भक्तो से भगवान अति प्रसन्न होते है ।

•

મોટા અંકેવાળિયા (મૂળીપ્રદેશ) નૂતન મંદિરમાં પુનઃ મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા વિધિ કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

રતનપર (મૂળીપ્રદેશ) નૂતન મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા વિધિ કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

કાંકરિયા મંદિરમાં કથા પારાયણ પ્રસંગે આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

લાભ પાંચમના કાંકરિયા મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે શ્રી હનુમાનજીની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તથા પ્રાસંગિક સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

કાલુપુર મંદિરમાં દીપોત્સવના વિવિધ પ્રસંગો

કાળી ચૌદશ

દિવાળી ચોપડા પૂજન

દીપોત્સવ - મંદિર રોશની

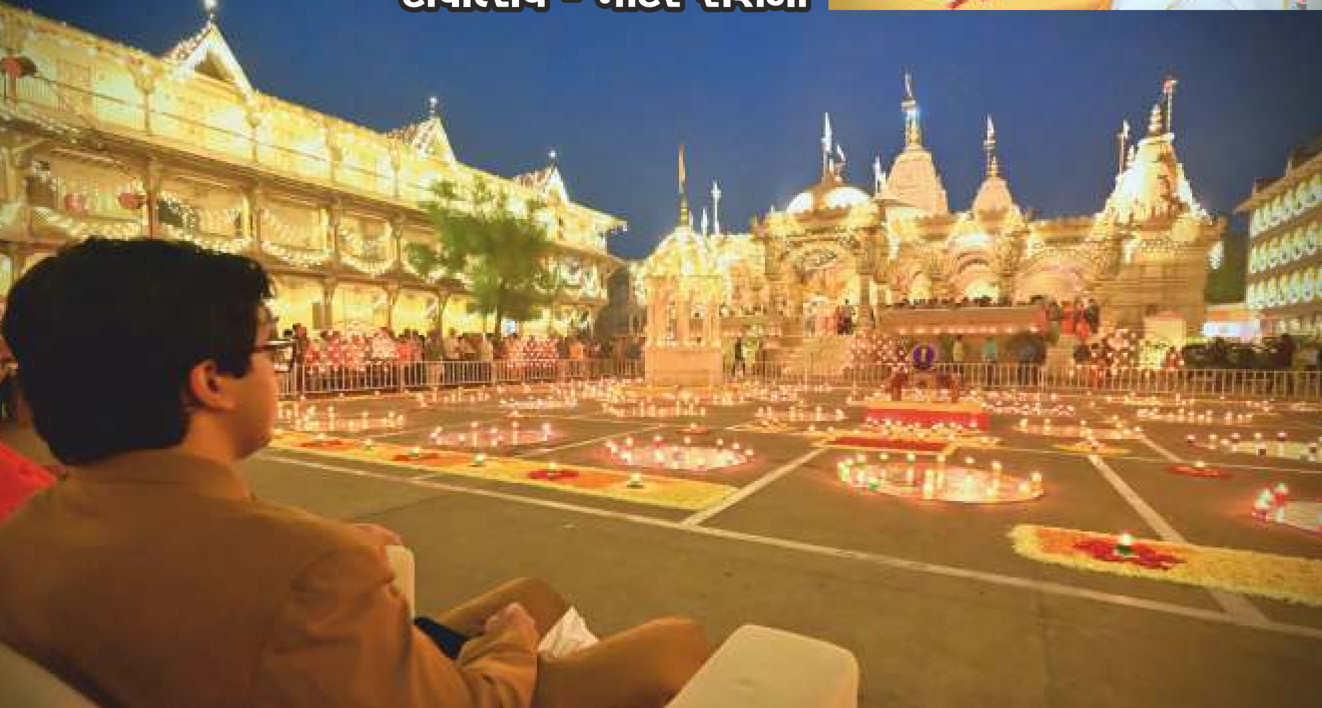

અન્નકૂટ દર્શન

શરદોત્સવ

હવેલીમાં રંગોળી

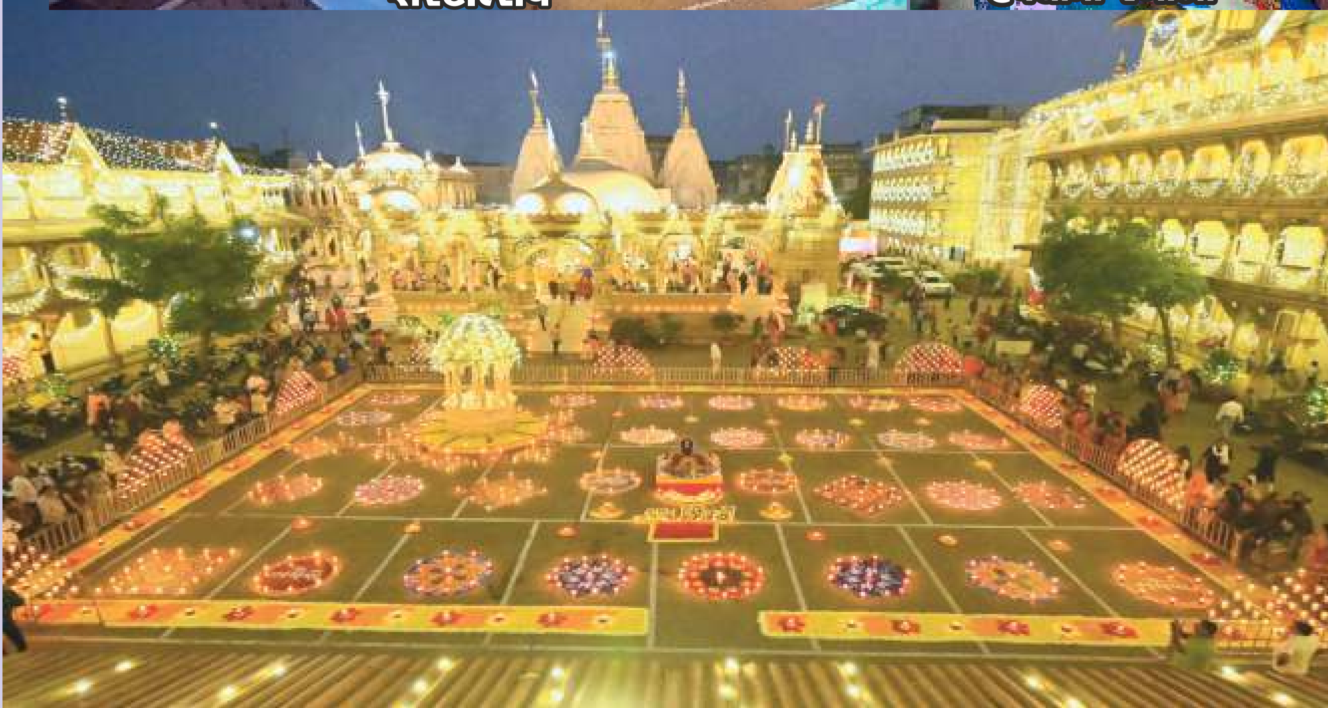

કાલુપુર મંદિરમાં નિયમિત યોજાતી પૂનમ સત્સંગ સભામાં દર્શન આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં સિધ્ધપુર મંદિરમાં કથા પારાયણ

દશેરાના ઉનાવા મંદિરમાં શસ્ત્ર પૂજન

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં કોટેશ્વર મંદિરમાં ૨૧૨ મિનિટની અખંડ ધૂન

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં મોટેરા મંદિરમાં ૨૧૨ મિનિટની અખંડ ધૂન

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં કલોલ(પંચવટી) મંદિરમાં ૧૨ કલાકની અખંડ ધૂન

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં ગાંધીનગર સે.-૨ મંદિરમાં પ.પૂ.ગાદીવાળાશ્રીનાં સાંનિધ્યમાં મહિલા સત્સંગ શિબિર

भक्तो को शौर्य सिखाया

– भावसार पल्लवीबेन विजयकुमार (लांघणज)

''गाम समीपे आव्या ज्यारे बोल्या वाला प्रत्ये प्रभु त्यारे मागो सोटियो सुंदर सारी, पट्टा रमता जांवु छे विचारी।''

महाराजने पार्षद को बोले हमे एक विचार आया है। दोपहर में रबारी भैंस लेकर आया तो आपने कुछ लकहा इस पर हमे विचार आया कि प्रत्येक के जीवन में शौर्य शूरवीरता तो होनी चाहिए। शौर्य एक सद्‌गुणहै। इसकी एक कहावत है कि शांति की रक्षा शौर्य से होती है। जिसमें शौर्य नही होता है। उसके जीवन में शांति नही होती है। शांति न होने पर साफ हो जाता है। इस लिये हमारे सभी देवी–देवता के हाथ में हथियार है। भगवान श्री रामचंद्र के हाथ में धनुष–बाण है। श्रीकृष्ण प्रभु के हाथ में सुदर्शन चक्र है। भोलेनाथ के हाथ में त्रिशूल है। माताजी के हाथ में तलवार है। किस लिये ? इनकी मरजी से पूरे ब्रह्मांड मे उथल पूथल हो सकती है। फिर भी देवो के हाथ में हथियार क्यो होता है। इससे भक्तो को प्रेरणा मिलती है। शौर्य सीखे। यदि आप के पास शौर्य नही है तो किसी काम के नही है। न घर के न घाट के न देश न धर्म के, शौर्य तो होना ही चाहिए।

एक पुराना भजन है। ''हरिनो मारग छे शूरो ए, इस भजन मे ऐसा नही कि हरि का मार्ग कमजोर है। कही पर नही आया है। स्वामिनारायण भगवान पार्षदो से बोले कि शौर्य के लिये सभी को प्रशिक्षण लेना चाहिए। इसके बाद स्वामिनारायण भगवानने भक्तो के पास से वृक्ष की डाली कटवायी। बोले अब आप को कला सिखा रहे है। दंड भंजन करते लेकिन किसी को चोट नही लग रही थी। मार को कैसे दंड से रोक ले वह कला बताये थे। कठिन समय में दंड चलाना आना ही चाहिए। शूरवीरता एक सा गुण है। यह सभी के लिये आवश्यक है। परिवार की रक्षा, जाति की रक्षा, धर्म की रक्षा, संस्कृति की रक्षा, देश की रक्षा के लिये शौर्य आवश्यक है। श्रीजी महाराज पार्षदो के साथ स्वयं दंड का खेल करते थे। ''सर्व ना सुख सिन्धु अनंत, घट पर वासी भगवंत थे तो नावे दावमां दयाल, एमां शुं आश्चर्य छे, विश्मल''।

पार्षदी दंड को लेकर मारते फिर भी श्रीजी महाराज किसी के लक्ष्य में नही आते थे। एकाध घंटे प्रशिक्षण देते हुए गाँव के पास आये। महाराजने कहा अब अधिक हो गया है। क्योकि यह तो लांघणज गाँव है। अब यह खेस बंद कर दो।

''रखो रमत कहयू छे, नाथ सर्वे देखशे गामनो साथ'' एमा समास नहि थाय लेश, करशे असुर जोईने द्वेष।''

गाँव वाले निंदा करेगे। स्वामिनारायण मारा–मारी करते आ रहे है। महाराज दंड कला कौशल को बंद करवा दिये। तत्पश्चात लांघणज गाँव में पधारे।

श्री स्वामिनारायण मंदिर बद्रीनाथधाम के नये महंत स्वामी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर बद्रीनाथधाम के नये महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी गुरु भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी (पोरडावाले) को नियुक्त किया गया है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या (यु.पी.) नये महंत स्वामी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या (यु.पी.) धाम के नये महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिसेवादासजी (वडनगर महंतश्री) को नियुक्त किया गया है। संपर्क : ९२७८० ०४२७९

जेतलपुरधाम श्री रेवती बळदेवजी हरिकृष्ण महाराज के नये पूजारीश्री

जेतलपुरधाम श्री रेवतीजी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के नये पूजारी स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु शास्त्री स्वामी नरनारायणदासजी तथा स.गु. स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी को नियुक्त किया गया है।

॥ श्री स्वामिनारायण नमः ॥

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर द्वारा मनाया जाने वाला

शिक्षापत्री लेखवन के २०० वर्ष

समैयो के यजमानश्री

विशेष सेवा तथा सूचना के लिये कालुपुर मंदिर कोठार कार्लालय अथवा पास के मंदिर के अग्रिम संतो का सम्पर्क करे

●	संतो की रसोई के यजमान (प्रतिदिन सुबह शाम दोपहर दिन के अनुसार रकम के आधार पर बदला जायेगा)	2,51,000 से 5,51,000
●	सांख्ययोगी की बहनो के लिये रसोई के यजमानश्री (प्रतिदिन सुबह दोपहर शायं दिन के आधार पर रकम में बदला जायेगा	2,51,000 से 5,51,000
●	मुख्य भोजनालय में हरिभक्तो के भोजन प्रसाद के यजमान (प्रतिदिन सुबह दोपहर शायं दिन के आधार पर रकम में बदला जायेगा	5,51,000 से 31,00,000
●	शिक्षापत्री भाष्य संहिता पाठ के यजमानश्री (२०० संहिता के यजमान)	5,00,000
●	श्री नरनारायणदेव के अन्नकूट के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन अन्नकूट का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	5,51,000
●	श्री नरनारायणदेव के वाघा के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन वाघा का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	2,51,000
●	श्री राधाकृष्णदेव के अन्नकूट के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन अन्नकूट का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	5,51,000
●	श्री राधाकृष्णदेव के वाघा के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन वाघा का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	2,51,000
●	श्री धर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्ण महाराज के अन्नकूट के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन अन्नकूट का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	5,51,000
●	श्री धर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्ण महाराज के वाघा के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन वाघा का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	2,51,000
●	अक्षरभुवन श्री घनश्याम महाराज के अन्नकूट के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन अन्नकूट का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	3,51,000
●	अक्षरभुवन श्री घनश्याम महाराज के वाघा के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन वाघा का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	1,51,000
●	रंगमहल श्री घनश्याम महाराज के अन्नकूट के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन अन्नकूट का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	3,51,000
●	रंगमहल श्री घनश्याम महाराज के वाघा के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन वाघा का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	1,51,000
●	हवेली श्री घनश्याम महाराज के अन्नकूट के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन अन्नकूट का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	1,51,000
●	हवेली श्री घनश्याम महाराज के वाघा के यजमानश्री (५ दिन प्रतिदिन वस्त्र का कार्य अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	1,51,000
●	श्री हनुमानजी महाराजकी के वाघा-अन्नकूट के यजमानश्री (५ दिन तक लगातार वाघा-अन्नकूट के यजमान लाभ ले सके)	2,51,000
●	श्री गणपतिजी हनुमानजी के वाघा-अन्नकूट के यजमानश्री (५ दिन तक लगातार वाघा-अन्नकूट के यजमान लाभ ले सके)	2,51,000
●	फूल-हार के यजमान श्री (५ दिन अलग-अलग यजमान लाभ ले सके)	5,00,000
●	शिक्षापत्री समूह महापूजा के यजमानश्री	51,000
●	शिक्षापत्री समूह महापूजा के सह यजमानश्री	21,000
●	१ दिवसीय सर्वमंगले नामावलि यज्ञ के यजमान (२१२ कुंडी)	1,11,111
●	ता. २४-१-२६ रात्रि कार्यक्रम यजमानश्री (३ दिन के ३ यजमान)	11,00,000

महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी : 98250 31877

कोठारी स्वामी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी : 99099 76009

१ लाख से अधिक सेवा करने वाले भक्तो के नाम पत्रिका में लिखवा जायेगा ।

समैया के उपलक्ष्य में

"समैया" के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा कोठारी स्वामी भक्तिजीवनदासजी के मार्गदर्शन से अपने गांधीनगर से-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर में अपने आने वाले समैया के अवसर पर धार्मिक-सामाजिक हुई कार्यक्रम का विवरण :

रक्तदान कैम्प

(१) से-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर और हैपी युथ फाउन्डेशन के सहयोग से ता. १०-९-२०२० के दिन अपने से-२ मंदिर में रक्तदान कैम्प का आयोजन किया गया था । जिस में कई भाई बहन रक्तदान किये थे ।

(२) श्री नरनारायणदेव मंडल द्वारा ता. १२-९-२०२५ के दिन अपने मंदिर में भजन-कीर्तन का प्रबन्ध किया गया था । जिस में विहारगाँव से सांख्ययोगी बहने पधारकर धुन-कीर्तन की थी ।

(३) ता. १३-९-२०२५ के दिन रात्रि में ८-३० से १०-३० तक भजन-कीर्तन किया गया था । जिस में मुबारकपुर महिला मंडल कीर्तन-भजन किये थे । जिसमें अधिक संख्या में भाई-बहनो ने भाग लिया था ।

(४) महिला सत्संग शिबिर : प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा एवम् आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव महिला मंडल गांधीनगर द्वारा ता. २०-९-२०२५ के दिन प्रातः ८ से १२ के मध्य महिला एवं युवतियो के लिये शिबिर का प्रबन्ध किया गया था । इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारकर लगातार २ घंटे तक बहनो को अलौकिक ज्ञान का दान दी थी । साथ में हवेली की सांख्ययोगी बहने पधारी थी । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री यहाँ की अच्छी व्यवस्था देखकर खुश हुई । बहनोने बड़ी संख्या में आकर लाभ ली थी । सभी को भोजन प्रसाद दिया गया था ।

(५) श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा के शताब्दी महोत्सव में श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ मे ता. २१-९-२०२५ रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन की गयी थी । जिस में डांगरवा गाँव के कई हरिभक्त धुन मे जुडे थे ।(कोठारी स्वामी - गांधीनगर से-२)

ऐतिहासिक नगर वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में महामंत्र की अखण्ड धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर में आनेवाले समैया के अवसर पर ता. १३-९-२०२५ से ता. १४-९-२०२५ तक २४ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुनकी गयी थी । (कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी - वडनगर मंदिर)

पोर (जि. गांधीनगर) गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में "समैया" के अवसर पर श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद से पोर गाँव की महिला मंडल आगामी समैया के अवसर पर बहनो के मंदिर में २१२ मिनट का श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन का प्रबन्ध की थी ।(बहनो का मंदिर पोर कोठारीश्री)

गोमतीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में "समैया" के अवसर पर २१२ मिनिट की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अपना आगामी ''समैया'' के अवसर पर गोमतीपुर मंदिर में २१२ मिनट का श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन हरिभक्त समूह में बैठकर किये ।(श्री न.ना.देव युवक मंडल - गोमतीपुर)

पाटम (कटकिया वाडा) श्री स्वामिनारायण मंदिर में "समैयो" के अवसर पर २१२ मिनिट की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल

के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर (कटाकियावाडा) में आनेवाले ''समैयो'' के अवसर पर ता. २१-९-२०२५ के दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र २१२ की धुन गयी थी । इस अवसर पर अहमदाबाद मंदिर से पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, सिध्धपुर महंत कुंजविहारी स्वामी, भक्ति स्वामी, गोपालस्वरुप स्वामी (सिध्धपुर) आदि संत मंडल आकर सभी को आशीर्वाद दिये थे । इस धुन में सिध्धपुर, ऊँझा, चाणस्मा, मंडलोप, दियोदर, भाभर, डीसा, बिलिया आदि गाँवो से हरिभक्त आये थे ।(प्रकाश सोनी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (ईडर प्रदेश) समैयो-जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर कई क्रिया-कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा लालोडा मंदिर के कोठारी स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, पूजारी स्वामी बालकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा में आगामी अपना ''समैयो'' और जेतलपुरधाम के द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर कई धार्मिक, सामाजिक क्रिया कलाप किया गया था । पूरे श्रावण महीने में कथा ता. २३-८-२०२५ से अखंड महामंत्र धुन, एकादशी के दिन अन्नकूट आदि कार्यक्रम द्वारा हरिभक्तो को अपने उत्सव के बारे में बताया गया था ।(शा. प्रेमप्रकाशदासजी - लालोडा)

जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर आयोजित महामंत्रधुन

(१) सर्वोपरिधाम छपैया १२ घंटे की महामंत्र धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षता में आयोजित जेतलुपरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर सर्वोपरि धाम छपैया में ता. ४-८-२०२५ के दिन पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी की प्रेरणा से जेतलपुरधाम से महंत स.गु. स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, स.गु. महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, स.गु. महंत शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी, स.गु. महंत शा. स्वा. देवस्वरुपदासजी आदि संत मंडल और गुजरात के हजारो भक्त १२ घंटे श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन किये थे । छपैया मंदिर के महंत स्वामी देव स्वामी और विष्णु स्वामी आदि संत मंडल धुन में पधारे थे ।(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

(२) माणेकपुर (पटेल) गाँव में २०० घंटे की महामंत्र धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षता में आयोजित जेतलुपरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर माणेकपुर (पटेल) गाँव में ता. १५-८-२०२५ के दिन २०० घंटे की धुन पूर्णाहुति के अवसर पर पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से जेतलपुरधाम से संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता धुन की पूर्णाहुति किये थे । आस-पास के गाँव वाले भक्त लाभ लिये थे ।(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

(३) भावपुरा गाँव में २०० घंटे की महामंत्र धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर आयोजित आगामी शिक्षापत्री लेखन २०० वर्ष के ''समैयो'' और जेतलुपरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर भावपुरा गांव में ता. १७-८-२०२५ के दिन २०० घंटे का श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन के पूर्णाहुति के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर से पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, जेतलपुरधाम से पू. पी.पी. स्वामी, ब्रह्मचारी शा. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी तथा महंत स.गु. स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी आदि संत मंडल कथा-वार्ता करके धुन की पूर्णाहुति किये थे । इस धुन में आस-पास के हरिभक्त आये थे । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

(४) वावोल श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से भावि आचार्य

१०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षता में आयोजित जेतलुपरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर वावोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १९-८-२०२५ के दिन सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से महंत स.गु. स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, ब्रह्मचारी शास्त्री स्वामी हरिस्वरुपानंदजी आदि संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । सभी हरिभक्तो को २०० वे पाटोत्सव की रुपरेखा समझाये थे । पूरा प्रबन्ध स.गु. शा. स्वा. नंदकिशोरदासजी ने किया था । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

(५) लसुन्द्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर में २०० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षता में आयोजित जेतलुपरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर लसुन्द्रा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २०-८-२०२५ के दिन २०० घंटे की धुन पूर्णाहुति की गयी । इस में जेतलपुरधाम से महंत स.गु. स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, ब्रह्मचारी शास्त्री स्वामी हरिस्वरुपानंदजी, शा. स्वामी नंदकिशोरदासजी आदि संत मंडल आकर कथावार्ता करके जेदलपुरधाम के उत्सव की रुपरेखा समझाये थे । गाँव के हरिभक्तोने लाभ लिया था । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

(६) श्री स्वामिनारायण मंदिर कठलाल २०० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षता में आयोजित जेतलुपरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर की प्रसादी स्थान कठलला गाँव में ता. २६-८-२०२५ के दिन २०० घंटे की धून पूर्ण की गयी थी । इस अवसर पर स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी, स.गु. महंत शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी (नाथद्वारा-पोरडा) जेतलपुरधाम से शा. जनमंगल स्वामी और अक्षरप्रिय स्वामीने कथावार्ता किये थे । उत्सव के विषय में बातकर धुन की पूर्णाहुति किये थे । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

(७) श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया २०० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षता में आयोजित जेतलुपरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया में हरिभक्तो के साथ मिलकर २०० घंटे की महामंत्र धुन किये थए । जिसकी पूर्णाहुति का अवसर ता. ३१-८-२०२५ के दिन नारणपुरा मंदिर से महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और कालुपुर मंदिर से संत आये थे । जेतलपुरधाम के कार्यक्रम की रुपरेखा समझाये थे । कथा-वार्ता एवम् आरती के प्रश्चात धुन की पूर्णाहुति की गयी थी ।(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी) समैया के अवसर पर नये वर्ष मे मानवतापूर्ण सुंदर प्रवृत्ति

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. शा. स्वा. गुरुप्रसाददासजी की प्रेरा से अपने पंचवटी कलोल मंदिर संस्था ''जम्या पहेला जमाडो'' उक्ति को सार्थक करते हुए । वृद्धाश्रम तथा अनाथाश्रम में वस्त्र का दान किया गया था । इस में अनेक भक्त लाभ दिये थे । कलोल श्री महिला मंडल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा कलोल सत्संग समाज के भक्तो ने वितरण में अच्छा सहयोग किये थे । सुंदर प्रबन्ध शा. यज्ञप्रकाश स्वामी (महंतश्री कलोल-जमीयतपुरा), भानु स्वामी, शा. उत्तम स्वामी, गोपाल स्वामी आदि संत मंडल ने किया था ।

कलोल मंदरि पंचवटी में ता. २४-९-२०२५ से ८-१०-२०२५ तक १५ दिवस तक दरिद्रनारायण को भोजन दिया गया । इस में कलोल महिला मंडल, कलोल सत्संग समाज, नरनारायणदेव युवक मंडल ने तन, मन, धन से सेवा किये थे । पूर्ण व्यवस्था महंत शा. यज्ञप्रकाश स्वामी और शा. उत्तम स्वामीने किया था । यह प्रवृत्ति समैया के अवसर पर की गयी थी । (शा. आनंद स्वामी - कलोल पंचवटी)

"समैयो" के अवसर पर कलोल (पंचवटी) मंदिर में शरदोत्सव मनाना

ता. ५-१०-२०२५ समैयो के अवसर पर अपने कलोल मुख्य मंदिर में प.भ. भीखाभाई रावजीभाई पटेल परिवार के यजमान पद से १२ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन की गयी । जिस में कलोल महिला मंडल, कलोल सत्संग समाज और कलोल नरनारायणदेव युवक मंडल आदि हजारो हरिभक्त ने धुन का लाभ लिये । महंतश्री शा. यज्ञप्रकाश स्वामी और महंतश्री शा. उत्तम स्वामी पूरा कार्यक्रम किये थे ।(शा. आनंद स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डीसा "समैयो" के अवसर पर महामंत्र धुन

श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी (सिद्धपुर खाण) की प्रेरणा से ता. ६-१०-२०२५ शरद पूर्णिमा के दिन अपने शिक्षापत्री के २०० वर्ष के समैया के अवसर पर डीसा के हरिभक्त प्रात ८ से १२ बजे २१२ मिनट की समूह में स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन की थी । जिस में हरिभक्तो ने लाब लिया था । (कोठारीश्री डीसा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धपुर में "समैयो" के अवसर पर महामंत्र धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी (सिद्धपुर-खाण) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धपुर में २१२ मिनट की धुन पूनम को ता. ७-१०-२०२५ के दिन शिक्षापत्री के २०० वर्ष के समैया के अवसर पर श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून २१२ मिनट की गयी थी । हरिभक्तो ने भाग लिया था । समूह भागवत कथा भी की गयी थी । ठाकुरजी को सुतर फेणी और हलवासन का अन्नकूट किया गया था ।(कोठारी स्वामी सिद्धपुर)

खाण और शिहोरी (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर "समैया" के अवसर पर सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से महंत शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी की प्रेरणा से खाण और शिरोही श्री स्वामिनारायण मंदिर में समैया के अवसर पर सत्संग सभा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । हरिभक्तोने लाभ लिया था । समैया की रुपरेखा समझाया गया था । (कोठारी स्वामी - सिद्धपुर)

कांकरिया (रामबाग) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से एवम् स.गु. महंत शा. स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी गुरु स.गु. महंत शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में कार्तिक सुद-५ लाभ पांचम ता. २६-१०-२०२५ रविवार के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा बालस्वरुप श्री कष्टभंजनदेव का १९० वाँ पाटोत्सव और श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का ४५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव महाभिषेक विधिवत रुप से मनाया गया । इसके यशस्वी यजमान अ.नि. पटेल कनैयालाल शंकरलाल परिवार वर्त गं.स्व. पुष्पाबेन कनैयालाल पटेल, प.भ. उमेशभाई पटेल कनैया पटेल, अ.सौ. साधनाबेन उमेशभाई पटेल, चि. प.भ. फेनिलकुमार उमेशभाई पटेल, अ.सौ. नेहाबेन फेनिलकुमार पटेल, तोरलबेन अर्पितकुमार शाह, चि. विहाना अर्पितकुमार शाह परिवार ने प.पू. महाराजश्री खुश होकर आशीर्वाद दिये थे । इस अवसर पर महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी ने श्रीहरि के ऐश्वर्य दर्शन की त्रिदिवसीय कथा का रसपान कराये थे । प्रसंगोचि सभा में अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी, अयोध्या मंदिर के पू. महंत शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी आदि धामो-धाम के संत प्रेरक प्रवचन दिये थे । इस अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्री भी पधारे थे । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद दिये थे । (कोठारी शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी - वडनगदर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा अहमदाबाद देश के १५० जितने हरि मंदिरो में अन्नकूट

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से स.गु. महंत शा.

स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे मार्गदर्शन अनुसार अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के १५० से अधिक हरि मंदिर के लिये ठाकुरजी को सुदंर पवित्र अन्नकूट प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी । यहाँ पर कोटेश्वर मंदिर से स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी के सीधे देखरेख में अन्नकूट की बाक्स में भर कर कालुपुर मंदिर में पहले से पैसाभरकर पंजीकृत मंदिर के कोठारीश्री को दिया गया था ।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

"समैयो" के अवसर पर श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद के अन्तर्गत कोटेश्वर मंदिर द्वारा की गयी सेवा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से आने वाले शिक्षापत्री के २०० वर्ष के समैयो के अवसर पर ''जम्या पहेला जमाडिये'' अभियान के अन्तर्गत दिवाली मं आनंद का दिपक जले । इस सुंदर आशय से कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर ने २०० से अधिक परिवारो को मिठाई, नमकीन, स्टील के डिब्बे में बाँटे थे । इस का शुभारम्भ कोटेश्वर अपने स्वामिनारायण मंदिर में स.गु. शा. राम स्वामी के हाथो द्वारा किया गया । (शा. घनश्याम स्वामी - कोटेश्वर)

श्री नरनारायणदेव देश के आगामी उत्सव

कार्तिक वद-११ शनिवार ता. १६-११-२०२५ उत्पति एकादशी ।

माघ सुद-५ मंगलवार ता. २५-११-२०२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२ पाटोत्सव ।

माघ सुद-६ बुधवार ता. २६-११-२०२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर मकनसर पाटोत्सव ।

माघ सुद-८ शुक्रवार ता. २८-११-२०२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी) पाटोत्सव ।

माघ सुद-११ सोमवार ता. १-१२-२०२५ मोक्षदा एकादशी उपवास, कानपुर (यु.पी.) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव ।

माघ सुद-१४/१५ गुरुवार ता. ४-१२-२०२५ व्रतनी पूनम-मुकुटोत्सव पूनम ।

माघ वद-११ सोमवार ता. १५-१२-२०२५ सफला एकादशी उपवास ।

माघ वद-१२ मंगलवार ता. १६-१२-२०२५ धनुर्मास प्रारंभ, ठाकोरजी का थाल पूर्व करना ।

समैया के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटेश्वर आयोजित अन्नकूट महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) तथा सत्संग समाज कोटेश्वर के अच्छे आयोजन से कोटेश्वर मंदिर में आगामी समैया के अपसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती (बहनोका) द्वारा दोपहर ३ से ४ बजे तक महामंत्र धून कथा, आदि की गयी । सुंदर अन्नकूट किया गया था । इसके मुख्य यजमान प.भ. सागरभाई ठक्कर परिवार - वर्त. विजयभाई शीलज - अन्य सेवा ठाकुरजी का परिधान श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, श्री गणपति महाराज, श्री हनुमानजी आदि ठाकुरजी के अनेक यजमान हरिभक्त बनकर सेवा दिये । कोटेश्वर, मोटेरा, गांधीनगर से बड़ी संख्या में हरिभक्तोने दर्शन का लाभ लिये थे ।(कोठारीश्री - कोटेश्वर मंदिर)

श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत (लक्ष्मी कालोनी नगर के पास कैनरा बैंक के पास) निर्माणाधीन घोडासर मंदिर में समैयो के अवसर पर २१२ मिनट की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (अयोध्या) की प्रेरणा से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव अर्न्तगत निर्माणाधीन घोडासर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर परिसर में ता. १६-११-२०२५ रविवार के दिन दोपहर उसे ७ समैयो के अवसर पर महामंत्र धुन की गयी । इस क्षेत्र में सभी हरिभक्त धुन में आये । आयोजक : महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसादजी, श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया, कांकरिया सत्संग समाज, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, महिला मंडल ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण

विश्व का सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर भाद्र सुद-१५ (पूनम) की सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में और धर्मकुल की कृपा से भाद्र सुद-१५ ता. ७-९-२०२५ रविवार पूनम को सत्संग सभा का सुंदर प्रबंध था। जिस के यजमान पद पर एक हरिभक्त परिकर ने लाभ लिया था । आज की कथा स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी गुरु स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) के वक्ता पदसे की गयी थी। अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये थे।(कोठारी स्वामी)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में जलझीलनी एकादशी श्री गणपतिजी का वरघोडा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ३-९-२०२५ बुधवार भाद्र सुद-११ जलझीलनी एकादशी को गणपतिजी का वरघोडा मंदिर के प्रसादी चौक में प.पू. लालजी महाराज के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल की अलौकिक छ्टा के साथ निकला था । शायं महातीर्थ नारणघाट मंदिर में साबरमती नदी के जल मे नौका विहार कराके उत्सव और आरती की गयी थी । (कोठारीश्री - कालुपुर मंदिर)

शांतिग्राम (अदाणी) नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा एवम् प.पू. महाराजश्री का ५३ वाँ प्रगटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा पूरे प्लान से शांतिग्राम (अदाणी) में श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत रमणीय-दर्शनीय मंदिर का निर्माण पूर्ण हुआ । आश्विन सुद-१० विजया दशमी ता. २-१०-२०२५ ने गुरुवार के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ५३ वाँ प्रगटोत्सव के दिन मूर्ति प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूर्ण हुआ था। अनेक सेवा भावी हरिभक्तोने यजमान बनकर लाभ उठाये थे । ता. ३०-९-२०२५ से २-१०-२०२५ के मध्य तीन दिन की कथा में शा. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (महंतश्री नारायणघाट), शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी (कांकरिया महंतश्री), शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (जमीयतपुरा-कलोल महंतश्री) ने सुंदर कथा का पान कराये थे । कोठारी शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी (कालुपुर) और शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (जमीयतपुरा कलोल महंतश्री) ने सभा का सुंदर संचालन किये थे। श्रीहरि के तीन अपर स्वरुप ने आशीर्वाद दिया था। अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से पूरा आयोजन राम स्वामी, पू. मुनि स्वामी किये थे। धामो धाम से अनेक संत-महंत पधारे थे । मंदिर का पूरा निर्माण प.पू. महाराजश्री के मार्गदर्शन अनुसार प.भ. करशनभाई राधवाणी और प.भ. अश्विनभाई ने किया था । (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

भाद्र सुद-१५ खग्रास चंद्र ग्रहण पर कालुपुर मंदिरमें धुन कीर्तन

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के परम सानिध्य में प्रसादी के सभा मंडप में भाद्र सुद-१५ ता. ७-९-२०२५ रविवार के दिन खग्रास चंद्र ग्रहण के अवसर पर रात्रि ९ से १-३० तक अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और संत और युवक हरिभक्त धुन-भजन, कीर्तन मे जुडे थे । ग्रहण पूर्ण होने के बाद सभी संत-हरिभक्त स्नन पूजा किये थे ।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम पर सभा और रात्रि में शरदोत्सव

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से पू स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प्रति पूनम को प्रसादी के सभा मंडप में धर्मकुल के सानिध्य में सत्संग सभा का

भव्य आयोजन किया गया था।

इस बार आश्विन सुद-१५ ता. ७-१०-२०२५ मंगलवार के दिन शरद पूनम को अ.नि. स.गु. भंडारी स्वामी रामचरणदासजी गुरु स्वामी कृष्ण प्रियदासजी की याद में हरिभक्तो के सौजन्य से (ह. स.गु. स्वामीश्री वल्लभदासजी) सत्संग सभा का भव्य आयोजन किया गया था । कथा के वक्ता पद पर स.गु.शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट महंतश्री) ने कथामृत का पान कराये थे । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था । कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी सभा का सुंदर संपादन किये थे।

शरदोत्सव

प्रसादी के अलौकिक चौक को सुंदर सजाया एवम् लाईट से शुशोभित किया गया है । वर्षा में भी अधिक संख्या में हरिभक्त आये थे । भाई तथा बहनो ने भव्य रास किये थे । इस अवसर पर गायक कलाकारश्री वासुदेव पाटडिया तथा उनकी टीम नंद संतो द्वारा रचित रास गरबा भक्ति के गीत गाये थे । श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल ने अलौकिक ओच्छव किये थे।

अन्त में प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । ठाकुरजी की आरती उतारे थे । सभी भक्तो को केसर युक्त दूध-पौआ (चिउरा) का प्रसाद दिया गया था । कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजीने अच्छी व्यवस्था की थी । (कोठारी स्वामी – कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर दीपोत्सव की उत्सव मनाना - काली चौदश श्री हनुमानजी की पूजा-आरती

आश्विन वद-१३ ता. १९-१०-२०२५ रविवार के दिन धर्मकुल के देवता श्री हनुमानजी महाराज का पूजनआरती शायं ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया था । श्री हनुमानजी महाराज के पूजारी बाबु भगत दादा को सुंदर रुप से सजाये थे । तथा अन्नकूट भी रखा गया था । (कोठारी स्वामी – कालुपुर मंदिर)

समूह चोपडा पूजन - शारदा पूजन

विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में प्रसादी सभा मंडप में आश्विन वद-१४ ता. २०-१०-२०२५ सोमवार शाम को ६ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा समूह चोपडा पूजन-शारदा पूजन विद्वान पंडितो द्वाराप ूर्ण किया गया । आज के कम्प्यूटर युग में अपनी मूल संस्कृति दिखाई देती है । प्रत्येक वर्ष-चोपडा पूजनमें बढोत्तरी देखने को मिल रही है । यह गौरव की बात है । सि अवसर पर पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे प्रेरणा से स.गु. कोठारी शा. स्वा. नारायणमुदिसजी ने अच्छी व्यवस्था दी थी । अंत तक हरिभक्त चोपडा ला रहे थे ।(कोठारी स्वामी – कालुपुर मंदिर)

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रसादी के चौक में दीपोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में आश्विन वद-३० ता. २१-१०-२०२५ मंगलवार के दिन विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीहरि जिस चौक में संत-हरिभक्तो के साथ फूलडोल उत्सव खेले थे । इस वर्ष प ूरे चौक में सुदंर लाईट-सजावट, फ्लेक्स बैनर कुदरती रंगीन फूल की रंगोली, पचीस हजार से अधिक दीपक जलाये गये थे । रात्रि ७-३० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री ने दीपोत्सव की आर्ती उतारे थे । सुबह से शाम तक सेवा भावी युवक-युवतियाँ तैयार खडे थे । पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी के सूचना एवम् मार्गदर्शन अनुसार कलाकार श्री प्रफुल खरसाणी द्वारा बनाये गये सामान द्वारा सजाया गया था । (कोठारी स्वामी – कालुपुर मंदिर)

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर दिपावली के भव्य रोशनी से चमका

भरतखंड के अधिष्ठाता देव परमकृपालु श्री नरनारायणदेव जहाँ पर विराजमान है । ऐसा विश्व का प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में दिवाली के अवसर पर निज मंदिर, सभा मंडप, हवेली, मुख्य प्रवेश द्वार को रोशनी से सजाया गया था । रात्रि के समय मंदिर दिव्य दिख रहा था । कई लोग प्रकाश को देखने आ रहे थे । यह सुंदर आयोजन पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजीने अपने सूझ-बूझ से करवाया था ।(कोठारी स्वामी – कालुपुर मंदिर)

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में भव्य अन्नकूटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन में विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में कार्तिक सुद-१ नूतन वर्ष सं. २०८२ ता. २२-१०-२०२५ बुधवार के दिन परमकृपालु श्री नरनारायणदेव समक्ष भव्य अन्नकूटोत्सव रखा गया था।

आज नूतन वर्ष के मंगल प्रभातपर प्रातः ५ बजे प.पू. बड़े महाराजश्री श्री नरनारायणदेव की मंगला आऱती किये थे।

प्रातः ६-३० पर श्रृंगार आऱती की गयी थी। प्रातः १०-३० पर श्री नरनारायणदेव की अन्नकूट आऱती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ने उतारी थी। आज प्रातः से लेकर मंगला से लेकर शायं तक भीड दिखाई दी। ऐसा सुंदर भव्य अन्नकूट आयोजन पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से उनके मंडल के संत भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी बालु स्वाम,ी हरिचरण स्वामी (नटु स्वामी), दिव्यस्वरुप स्वामी आदि संत मंडल और हरिभक्त रात-दिन अन्नकूट बनाने से लेकर गाँव-गांव में प्रसाद की सेवा करके भगवान श्री नरनारायणदेव की कृपा और धर्मकुल की कृपा पाये। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

काली चौदश को जमीयतपुरा श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर में यज्ञ

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु.शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी की प्रेरणा से अश्विन वद-१४ काली चौदश को ता. १९-१०-२०२५ रविवार को जमीयतपुरा श्री प्रभा हनुमानजी महाराज के सानिध्य में यज्ञ की अच्छी व्यवस्था की गयी थी। इस अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। उनके हाथो से पूर्णाहुति की गयी थी। प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी, शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी और यहाँ के मंदिर के महंतश्री शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी आदि संत मंडलने दादा की महिमा और आगामी ''समैयो'' का प्रचार किया गया था। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था। (शा. आनंद स्वामी)

मूली प्रदेश
कारोल श्री स्वामिनारायण मंदिर ११२ वाँ पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मूली प्रदेश कारोल (ता. चुडा) श्री स्वामिनारायण मंदिर का ११२ वाँ पाटोत्सव कार्तिक सुद-७ के दिन उलासपूर्वक मनाया गया। घर-घर से शुद्ध अन्नकूट बनाकर ठाकुरजी को चढाया गया था। गाँव के छोटे-बड़े प्रति हरिभक्त दर्शन करके श्री नरनारायणदेव के कैलेन्डर को प्राप्त किये। (कोठारीश्री नरेन्द्रभाई)

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

Information for foregin donation towards Shree Narnarayan Mandir Trust for all Satsangi, who are belongs to abroad (out side India) remit their donation to Shree Narnarayan Mandir Trust, Kalupur, Ahmedabad. Only in Our FCRA A/c. Details as under.

BANK NAME	:	STATE BANK OF INDIA
BRANCH	:	FCRA CELL, MAIN BRANCH, SANSAD MARG, NEW DELHI-110001
BENEFICIARY NAME	:	SHREE NARNARAYAN MANDIR TRUST
SAVING BANK A/C. NO.	:	401 890 15898
IFS CODE	:	SBIN0000691
SWIFT CODE	:	SBININBB104
BENEFICIARY ADDREES	:	SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE, KALUPUR, AHMEDABAD, GUJARAT, INDIA

Special instruction for remittance made through NRE Cheque in Indian Rs.-

If any donation route from abroad to NRE A/c in India (of Donor), please donate with your cheque along with copy of passport of related donor, Only afterwards their donation will be credited in above mentioned A/c only.

अहमदावाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

अषाढ सुद-१ प.भ. अ.नि. हर्षागौरी कांतिभाई पटेल (गामडी), अ.नि. स्वा. भजनप्रकाशदासजी तथा अ.नि. स्वा. अचलस्वरूपदासजी (कुंडाल) । **अषाढ सुद-२** प.भ. मनीषाबेन विपुलभाई पटेल (सोलडी), प.भ. सविताबेन रणछोडभाई देवाणी (निकोल), घनश्याम टीम्बर्स (गोता) । **अषाढ सुद-३** प.भ. राधाबाई अरजण केराई (कच्छ) । **अषाढ सुद-४** प.भ. वसंतीबेन शंकरलाल पटेल (मोटेरा), प.भ. शांताबेन जशवंतभाई पटेल (बापुनगर), प.भ. निरवभाई, प.भ. परेशभाई पटेल (अहमदाबाद) । **अषाढ सुद-५** प.भ. विजयकुमार अमृतभाई पटेल (वडु), प.भ. जगदीशभाई डाह्याभाई पटेल (देउसणा), प.भ. भावेशकुमार कनैयालाल जणसारी (नरोडा), प.भ. तेग सूरज भावसार (अहमदाबाद) । **अषाढ सुद-६** प.भ.अ.नि. वालीबेन लालजी वाघजी खेताणी (मदनपुर-कच्छ), श्रीजी प्रसन्नार्थे (साबरमती), प.भ. योगेशकुमार जे. पटेल (डांगरवा) । **अषाढ सुद-७** प.भ. प्रभुभाई भीमाभाई बावलवा (अहमदाबाद) । **अषाढ सुद-८** प.भ. सचिन मुकेशभाई पटेल (नाना उभडा), प.भ.अ.नि. केशवलाल नारणभाई पटेल (पोर) । **अषाढ सुद-९** प.भ.अ.नि. विश्राम रामजी हालाई (कोडकी-कच्छ) । **अषाढ सुद-१०** प.भ. कनुभाई जोईताभाई चौधरी (बदपुरा), प.भ.अ.नि. नानजीभाई देवजीभाई भुवा (हरिपर), प.भ. निरवभाई भरतभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. शर्मिलाबेन भरतभाई चौधरी (भीमपुरा), प.भ. सुरेशभाई एन. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रेखाबेन सुरेशभाई पटेल (मुंबई) । **अषाढ सुद-१२** (एकादशी) निलकंठ लेन्ड स्क्रेप एसोसिएटस प.भ. रामदास बापा परिवार (उनावा) । **अषाढ सुद-१२** प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. रमेशभाई पी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. चतुरभाई लवजीभाई देवाणी (निकोल), प.भ.अ.नि. रणछोडभाई ईश्वरभाई पटेल (उनावा), प.भ. रामबाई अरजण वागडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. मनसुखभाई (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. गोस्वामी भगुगीरी आनंदगीरी (लिंबोदरा), प.भ. अस्मिताबेन भावेशभाई लोरीया (हलवद), प.भ. प्रियंकाबेन विपुलभाई जोगाणी (अहमदाबाद), एप्रोच बापुनगर महिला मंडल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. चंदुभाई कचरदास पटेल (डांगरवा), प.भ. चेतनभाई महेता (अहमदाबाद) । **अषाढ सुद-१३** प.भ.अ.नि. जसुभाई गोपालभाई पटेल (भावनगर) । **अषाढ सुद-१४** प.भ.अ.नि. नारणभाई मोतीभाई चौधरी (बालवा), प.भ.अ.नि. महेशभाई नारणभाई पटेल (उनावा), प.भ. पूजाबेन वत्सलभाई दवे (अहमदाबाद) । **अषाढ सुद-१५** प.भ.अ.नि. रविकांत मस्की (अहमदाबाद), प.भ. मेहुलभाई जगदीशभाई ठक्कर (मुंबई), प.भ.अ.नि. भीखाभाई जीवणभाई (अहमदाबाद), प.भ. प्रेमजी नारण शामलीया तथा अ.नि. हिरजी नारण वेकरीया (केरा-कच्छ).

अषाढ वद-१ प.भ. शिव पटेल प्रिया पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अचलजी पूनमाजी गोलीया (वाली-राज.) । **अषाढ वद-२** प.भ. कांति रामजी पिंडोरीया (दहींसरा-कच्छ) । **अषाढ वद-३** प.भ. हार्दिककुमार दिनेशभाई पटेल (डांगरवा), प.भ. माधवलाल जुगलदास सोनी, प.भ. किंजलबेन भाईलालभाई (गोठीब), प.भ. हर्षिल किरीटभाई पटेल (नरोडा) । **अषाढ वद-४** प.भ. फेनिल तथा निरव पटेल (कोबा), प.भ. प्रविणभाई हिराभाई रावल (कनीपुर), प.भ. हसमुखभाई केशवभाई मालवीया (निकोल), प.भ. नानजीभाई आंबाभाई हडियल (अहमदाबाद), प.भ. दशरथभाई अंबालाल पटेल (मोटेरा), प.भ. ममताबेन कमलेशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. अमृतभाई देवजीभाई पटेल (महादेवनगर), प.भ. भीखाभाई मणीभाई पटेल (घमीज), प.भ. हिरेन हसमुखभाई सोनी (निकोल), प.भ. डॉ. सूरज जयेशकुमार पटेल (मोम्बासा), प.भ. मनीषाबेन जयेशकुमार (अहमदाबाद), प.भ. कोकीलाबेन रतीलाल पटेल (गोठीब) । **अषाढ वद-४** प.भ. जसभाई नरसीभाई पुरोहित (वापा-राज.), प.भ. स्पर्श अमितभाई लादाणी (माणावदर) । **अषाढ वद-५** प.भ. श्रेय दर्शनभाई पटेल (कणभा), प.भ.अ.नि. मनीषकुमार अमृतलाल पाटडीया (अहमदाबाद), प.भ. ईश्वरभाई नानजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मंगुबेन कांतिलाल पटेल (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. शामबाई मनजी आसाणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. वेलाभाई कचराभाई चौधरी (बालवा) । **अषाढ वद-६** प.भ.अ.नि. लक्ष्मणभाई जीवणभाई चौधरी (दगावाडीया), प.भ. धनजीभाई वशरामभाई वघासीया (वांसीयाली) । **अषाढ वद-७** प.भ. शामलदास नवाजी पटेल (देवदा का गोलीया-राज.), प.भ. अंजली भरतभाई चौधरी (भीमपुरा) । **अषाढ वद-८** प.भ. राजुभाई जीवाभाई पटेल (चडासणा), प.भ.अ.नि. अमरशीभाई लवजीभाई पटेल (अहमदाबाद) । **अषाढ वद-१०** प.भ.अ.नि. सरोजबेन दोशी (वडोदरा), प.भ. भावेशकुमार प्रह्लाददास पटेल (राणीप), प.भ. हरगोविंदभाई विठ्ठलाणी (मुंबई), प.भ. प्रेमजी करशन पिंडोरीया (कच्छ-भुज), प.भ. जयाबेन परसोतमदास कोराट (सुरत), प.भ. अरविंदभाई झवेरभाई लींबासीया (सुरत), प.भ. ध्रुव मुकेशभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. साकरबेन नारणभाई पटेल (पोर), प.भ.अ.नि. घेलाभाई राजाभाई कोटडीया (चोरवाड), प.भ. विष्णुभाई चौधरी (गांधीनगर), प.भ. स्नेहलभाई रमेशभाई पटेल (भावनगर), प.भ.अ.नि. देवजीभाई कानजीभाई सांखला (नेत्रा-कच्छ) । **अषाढ वद-१२** प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. अतुलभाई के. मोदी (गांधीनगर), प.भ. मनसुखभाई खीमजीभाई पिंडोरीया (सुरत), प.भ. मनहरभाई नाथाभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जैनिलकुमार भावेशभाई काछडीया (भरूच), प.भ. प्रविणकुमार आर. पटेल (वापी) । **अषाढ वद-१४** प.भ.अ.नि. प्रेमजी मावजी सेंधाणी (नारणपर-कच्छ), लक्ष्मीनारायण महिला मंडल (दाडमा) । **अषाढ वद-३०** प.भ.अ.नि. अरजण करशन गोरसीया (माधापर-कच्छ), प.भ. मयंक कामदार (पोरबंदर)

श्रावण सुद-१ प.भ.अ.नि. गोपालभाई बेचरदास पटेल (अहमदाबाद) । **श्रावण सुद-२** प.भ. भारतीबेन अर्जुनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. साकरबेन कनुभाई पटेल (अंबापुर), प.भ. ईनाथीबेन रशेषभाई दवे (अहमदाबाद) । **श्रावण सुद-३** प.भ. श्लोक वासुदेवभाई पटेल (मोखासण), प.भ. गोमतीबेन प्रदिपभाई मोदी (वडनगर), प.भ. धैर्यकुमार रमणभाई पटेल (आकरूंद), प.भ. मितेष हसमुखभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. चंदुजी प्रतापजी बिहोला (पालज), प.भ. हसमुखभाई नरभेरामभाई शिणोजीया (नरोडा). **श्रावण सुद-४** प.भ. कोकीलाबेन मधुभाई मांगरोलीया (अहमदाबाद). **श्रावण सुद-५** सांख्ययोगी राजबाई रतनशीभाई (रवापर-कच्छ), ईश्वरपुरा महिला मंडल, प.भ. कालुभाई गोविंदभाई गजेरा (बापुनगर) । **श्रावण सुद-६** सांख्ययोगी हर्षाबा नारणभाई (कच्छ), प.भ. दिपीकाबेन कमलेशभाई पटेल (मोखासण) । **श्रावण सुद-७** प.भ.अ.नि. भाणभाई हरजी हिराणी (रामपर वेकरा-कच्छ), प.भ. रेखाबेन मुकेशकुमार पटेल (पलीयड), प.भ. पार्वतीबेन पुनाभाई भीमाणी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. राजेन्द्रभाई मधुभाई सुखडीया (सुरत) । **श्रावण सुद-८** प.भ.अ.नि. मूलजी हरजी वाघजीयाणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. मनीषाबेन

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

कल्पेशकुमार पटेल (झुलासण), प.भ. आदित्य तथा पोजस दिपकभाई पटेल (अहमदाबाद) । **श्रावण सुद-९** प.भ. शांताबेन बेचरभाई पटेल (धनसुरा), प.भ. महेन्द्रभाई जीवणभाई पटेल (मारूसणा), प.भ. मालव तुषारभाई काथरोटीया (निकोल), प.भ. रमाबेन महेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रसिकभाई शंकरभाई पटेल (सुरेन्द्रनगर), प.भ. क्रिषराजसिंह तरूणसिंह झाला (गोधावी), प.भ. भारतीबेन लालभाई सोनी, प.भ. चंदुभाई हाथीभाई पटेल (वडताल), प.भ. ब्रिजेश भरतभाई गजेरा, प.भ. दिपेशभाई पटेल (सायरा) । **श्रावण सुद-१०** प.भ. कपिलाबेन मूलजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. दशरथभाई तुलसीदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. माणेकभाई लक्ष्मणभाई पटेल (बामणवा) । **श्रावण सुद-११** प.भ. शांताबेन लवजीभाई चौधरी (प्रतापपुरा), प.भ.अ.नि. अर्पितकुमार सुरेशभाई पटेल (वसई-टींबा), प.भ. कांतिलाल मावजी खीमाणी (दहींसरा-कच्छ) । **श्रावण सुद-१२** प.भ. हंसाबेन मुकुंदभाई कोठारी (पीठवडी), प.भ. जीज्ञेशभाई वालजीभाई शियाणी (अहमदाबाद), प.भ. दशरथलाल मोहनलाल पटेल (उंझा), प.भ. ईश्वरलाल नारणभाई मारू (औरंगाबाद), प.भ. मधुबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जगदीशभाई बाबुभाई पटेल (हिंमतनगर), प.भ. शैलेषभाई भावसार (हरिॐ) (सरसपुर), प.भ.अ.नि. मंजुलाबन बाबुभाई (अहमदाबाद), प.भ. मणीभाई प्रेमजीभाई पटेल (अहमदाबाद) । **श्रावण सुद-१३** प.भ. डाह्याभाई लवजीभाई चौधरी (ईश्वरपुरा-बदपुरा), प.भ.अ.नि. शारदाबेन रमणीकभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. मौलिन उपेन्द्रभाई अमीन (अहमदाबाद), प.भ. निरव भगीरथभाई परसाणा (अहमदाबाद) । **श्रावण सुद-१४** प.भ.अ.नि. रामजी वालजी जेसाणी (बलदीया-कच्छ), आर.के. कन्स्ट्रकशन, आर. एस. कन्स्ट्रकशन (मांडवी-कच्छ), प.भ. मनीषाबेन पटेल (कलोल), प.भ. मधुभाई गोरधनभाई लाठीया (अहमदाबाद) । **श्रावण सुद-१५** प.भ. रितेष, फाल्गुनी, धर्मिष्ठा (अहमदाबाद), प.भ. मेहुल जगदीशभाई ठक्कर (मुंबई), प.भ. करशन देवजी ध.प. रतनबाई परिवार (नारणपर-कच्छ), प.भ. किरणभाई गोविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अंकुश विरजी राघवाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. भरतकुमार एच. पटेल, प.भ. सीताबेन विनोदभाई पटेल.

श्रावण वद-१ स.गु. स्वा. नित्यमुक्तदासजी गुरु मुनि स्वामी (अहमदाबाद), प.भ. एमी वासुलाल पटेल (मोखासण), प.भ. दासभाई, मनसुखभाई, कहुलाबा, भुपतभाई, बाबुभाई (अहमदाबाद), प.भ. रविकुमार वल्लभभाई (रडोदरा), प.भ. रमेशभाई सोमचंद पटेल (अहमदाबाद), प.भ. प्रविणभाई बबलदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. सामबाई विश्राम हिराणी (कोडकी-कच्छ), प.भ. प्रविणभाई हरिभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. चंदुभाई भलाभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पार्थिव राकेशभाई पंचाल (आकरूंद) । **श्रावण वद-२** प.भ. धीरूभाई सुहागीया (उना), सांख्ययोगी मंजुबा (अहमदाबाद हवेली), प.भ. वियान उमेशभाई रामाणी (अहमदाबाद), प.भ. रामजी लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. मेघजी लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ). **श्रावण वद-३** प.भ. रतनबाई कल्याण भुडीया, प.भ. विष्णुभाई सेंधाभाई चौधरी (बालवा) । **श्रावण वद-४/५** प.भ. मानबाई देवजी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. लीलाबेन दिलीपभाई चौधरी (प्रतापपुरा) । **श्रावण वद-६** प.भ. जीवीबेन रमणलाल पटेल (देवडा), प.भ. आरतीबेन अरविंद भुडीया (सुखपर-कच्छ) । **श्रावण वद-७** प.भ. अचलाजी पूनमाजी पटेल (गोलीया राज.) । **श्रावण वद-८** प.भ. विनय वसंतभाई वरू (सुरत), प.भ. सुरेश लालजी पटेल (केरा-कच्छ), अ.नि. स्वा. धर्मकिशोरदासजी (राजकोट गुरुकुल) । **श्रावण वद-९** प.भ. भावनाबेन दिनेशचंद्र पटेल (राजपुरा), प.भ. राजविरसिंह प्रदिपसिंह वनार (कमीयाला), प.भ. सूर्याबेन भरतभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कौशिकभाई जे. ठक्कर (बावला), प.भ. घनश्यामभाई पी. (निकोल), प.भ. निरव संजयभाई पटेल (वावोल), प.भ. अरविंदभाई त्रिकमभाई पटेल (निकोल), प.भ. रमेशभाई शंकरभाई पटेल (धनसुरा), प.भ. ध्रुव परेशकुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रमेशभाई पटेल (घाटलोडीया), प.भ. तन्वीबेन रमेशभाई पटेल (झुंडाल) । **श्रावण वद-१०** प.भ. निरंजनभाई पंचाल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कनुभाई डाह्याभाई कैला (हैद्राबाद) । **श्रावण वद-१२** प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ.अ.नि. डिम्पलबेन बिपीनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. सीताबेन बाबुभाई पटेल (वडु), प.भ. मंजुलाबेन विक्रमभाई पटेल (झुंडाल), प.भ.अ.नि. गोपालभाई नारण वेकरीया (बलदीया-कच्छ) । **श्रावण वद-१३** के.डी. एम. गृप, प.भ. जयंतीभाई बाबुभाई चौधरी (बापुपुरा), प.भ. परसोतमभाई काशीभाई पटेल (अहमदाबाद) । **श्रावण वद-१४** प.भ.अ.नि. प्रकाश हरिलाल सुथार (वेजलपुर) । **श्रावण वद-३०** प.भ. आर्यन सुरेशभाई चौधरी (बापुपुरा), प.भ. योगेश वासुदेव पाबारी (अहमदाबाद), प.भ. शिरीषकुमार जगजीवनभाई पटेल (गोठीब), प.भ. भरतभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. वीणाबेन जयेशभाई चौधरी (अहमदाबाद), गं.स्व. बबुबेन रमणलाल पटेल (डांगरवा), प.भ.अ.नि. मोहनभाई खोडाभाई (हलवद), प.भ. भावेशभाई घनश्यामभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. प्रविणभाई कानजीभाई (ध्रांगध्रा), प.भ. शकरीबेन सोमाभाई पटेल (मोखासण)

अक्षरनिवासी संतो को भावभीनी श्रध्धाजंलि

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर संत स.गु. स्वामी ओमप्रकाशदासजी गुरु स.गु. गवैया स्वामी कृष्णचरणदासजी (खाण मंदिर भूतपूर्व महंतश्री) कार्तिक सुद-४ ता. २५-१०-२०२५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज संचालित विश्रांतिभवन - भाट के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

दुबई में सर्व प्रथम मनाये सत्संग सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी मंदिर में काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी की आरती उतारते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. महाराजश्री ।

जेतलपुर मंदिर में द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में २०० घंटे की अखंड धून के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से

शिक्षापत्री लेखन २०० वर्ष का

समैयो

23-1-2026 - 27-1-2026

अध्यक्ष : प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

स्थल :-

"पर्व" ग्राउन्ड, प्रभा हनुमानजी मंदिर के बागल में,
जमीयतपुरा, अहमदाबाद ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद

Praful Kharsani